ISSN-2321-3981
सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र
चैत्र २०७८
अप्रैल २०२१
नवसंवत् की शुभकामना
₹२०
सारंग

कविता रामनवमी पर विशेष

पुरुषोत्तम कहलाये राम

– अमन श्रीवास्तव

त्रेता युग में आये राम।
दशरथ के घर जाये राम।।
शिक्षा गुरु से पाये राम।
विश्वामित्र ले जाये राम।।
धनुष यज्ञ में छाये राम।
सीता ब्याह के लाये राम।।
पिता की आज्ञा पाये राम।
वन निवास को जाये राम।।
कंदमूल फल खाये राम।
चित्रकूट को आये राम।।
कुटिया वहीं बनाये राम।
ऋषि–मुनि को समझाये राम।।
पंचवटी तब आये राम।
मृग के पीछे धाये राम।।
सीता तभी गंवाये राम।
कपि को सखा बनाये राम।।
बालि को मार गिराये राम।
वानर सेना पाये राम।।
सिय की खोज पठाये राम।
सिंधु पे सेतु बनाये राम।।
लंक–विजय को जाये राम।
राक्षस मार गिराये राम।।
विभीषण अपनाये राम।
लंका पर जय पाये राम।।
जनक लली को लाये राम।
अवधपुरी को आये राम।।
राज्य पुन: से पाये राम।
मर्यादा सिखलाये राम।।
सबके हृदय समाये राम।
पुरुषोत्तम कहलाये राम।।

– शहडोल (म. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

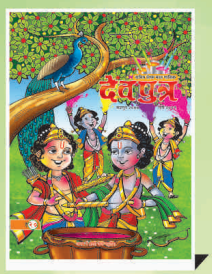

चैत्र २०७८ ▪ वर्ष ४१
अप्रैल २०२१ ▪ अंक१०

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो!

नूतन संवत्सर के आरंभ और श्रीराम नवमी के पर्वों की विशेष सुगंधि से सुवासित है यह मास। भारतीय संस्कृति में ये दो पर्व अत्यन्त विशिष्ट महत्व रखते हैं।

नवसंवत्सर का आरंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। यह दिन सृष्टि के आरंभ दिवस, धरती माता के जन्मदिवस, भगवान श्रीराम के राज्यारोहण एवं युधिष्ठिर के राज्याभिषेक दिवस के रूप में तो प्रतिष्ठित है ही प्राकृतिक रूप से वसन्त ऋतु में वैदिक मधुमास के मध्य आने वाला यह पर्व नवसृजन का स्वयं संकेत देता है। यह शक्ति पर्व नवरात्र का आरंभ भी है और दिग्विजयी सम्राट विक्रमादित्य द्वारा नव संवत् का शुभारंभ दिवस भी। ये सब प्रसंग हमारे सांस्कृतिक गौरव एवं उसकी प्राचीनता तो प्रकट करते हैं इसलिए यह इतना महत्वपूर्ण दिन है।

दूसरा महापर्व है श्रीराम नवमी। यह केवल इसलिए महापर्व नहीं है कि इस दिन भगवान श्रीराम का जन्मदिवस है, अवतरण दिवस है, बल्कि इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इस दिन जन्में श्रीराम भारतीय संस्कृति के अद्वितीय महानायक हैं। वे मानव को श्रेष्ठतम मानव बनने के लिए आवश्यक श्रेठतम, सार्वभौमिक व सार्वकालिक जीवन मूल्यों के महासम्मुच्चय है। किसी भी अन्य एक ही व्यक्तित्व में इतने जीवन मूल्यों को एकत्र पाना विश्व इतिहास में दुर्लभ है।

अपने लिए **'राम'** की आवश्यकता हर युग को रहती है। अपने समय की चुनौतियों को स्वीकारना और लोक मंगल की कामना से स्वयं कष्ट उठाकर भी प्रबल पराक्रम करना ही **'राम'** होना है। मानवता की रक्षा और सज्जनों के संकट निवारण हेतु दुष्टों का दमन करने वाला हर मानव सही अर्थ में **'रामत्व'** से युक्त है, चाहे वह किसी भी देश, धर्म, जाति अथवा पंथ का हो। **'राम'** दशरथ पुत्र, कौशल्यानंदन या विष्णु के अवतारी होने से ही विश्व के महानायक नहीं है बल्कि सत्य, शील, साहस, संयम, सेवा, सहायता, समता, स्नेह जैसे जीवन मूल्यों का आचरण अपने जीवन में धारण करने से ही वे उस आदर्श चरित्र के स्वामी बने जिसकी अपेक्षा हरयुग में हर राष्ट्र को अपने नागरिकों में रहती आयी है।

अपनी भारतमाता भी अपनी संतानों में इसी रामत्व को खोजती रही है और क्यों न हो राम आखिर उसी की गोद में जन्में, खेले एवं बढ़े उसके लाल ही तो थे।

आइये, अपने जीवन में रामत्व की वृद्धि करने के प्रयत्न करें क्योंकि आज भी **'राम'** केवल भारत की नहीं विश्व की आवश्यकता हैं और आगे भी रहेंगे।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- संकल्प वर्ष : नववर्ष -डॉ. सेवा नंदवाल ०५
- अप्रैल फूल बनाया -हरिन्दरसिंह गोगना १५
- तीर्थयात्रा -गोपाल माहेश्वरी १८
- पृथ्वी की आत्मकथा -रामगोपाल राही २४
- वो फूली वह भी फूली -पद्मा चौगांवकर ३२
- नन्हीं परी और बादल -संजीव जायसवाल 'संजय' ३८
- सुनहरे पंख -डॉ. घमण्डी लाल अग्रवाल ४२
- नरेश का पौधा -डॉ. प्रभा पंत ४४
- चोर के घर में चोर -पवन कुमार वर्मा ४८

छोटी कहानी

- अच्छाई का उजाला - शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी २३
- गुण का सम्मान -सुजीत सिन्हा ४१

यात्रा वृतान्त

- गुप्त गोदावरी - अरविन्द कुमार साहू २०

आलेख

- वैज्ञानिक नववर्ष - नरेन्द्र देवांगन ०७
- नववर्ष का स्वागत -राजेश गुजर १२

कविता

- पुरुषोत्तम कहलाए राम - अमन श्रीवास्तव ०२
- चंदा राजा नन्हें बालक -डॉ. राकेश चक्र ३७
- पहली बार -शादाब आलम ४०
- गिलहरी की जूती -धर्मेन्द्र सिंह 'धरम' ५१

बाल प्रस्तुति

- मैं फलों का राजा - स्वाति रावल ५०

एकांकी

- डॉक्टर की सलाह - साधना श्रीवास्तव ३०

स्तंभ

- विषय एक कल्पना अनेक: नववर्ष
  - नवसंवत् का राग - डॉ. हरीश निगम १०
  - नव विक्रम संवत्सर - गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' १०
  - नववर्ष - सुरेशचन्द्र सर्वहारा ११
- आओ ऐसे बनें - मदन गोपाल सिंघल १४
- संस्कृति प्रश्नमाला १६
- देश विशेष - श्रीधर बर्वे २७
- स्वयं बनें वैज्ञानिक - प्रो. राजीव तांबे - सुरेश कुलकर्णी ३४
- यह देश है वीर जवानों का-१७ ३५
- आपकी पाती ३५
- छ: अंगुल मुस्कान ४०
- पुस्तक परिचय ४६
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग ५०

चित्रकथा

- पृथ्वी दिवस - देवांशु वत्स ०९
- बुद्धू कौन? - देवांशु वत्स १७
- ब्रेक - संकेत गोस्वामी ४७

विविध

- सचित्र जानकारी - संकेत गोस्वामी २९

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

संकल्प वर्ष : नववर्ष

– डॉ. सेवा नन्दवाल

''बच्चो! सोचो अगर तुम्हारा प्रिय जन्मदिन एक वर्ष में दो बार आने लगे तो कैसा हो?'' कक्षा ८वीं की अध्यापिका सांत्वना दीदी ने मुस्कुराते हुए यह प्रश्न कर विद्यार्थियों के दिल में हलचल मचा दी।

''तब तो बड़ा मजा आएगा दीदी!'' वर्ष में दो बार मौजमस्ती करेंगे, दो बार उपहार, दो बार नए कपड़े मिलेंगे। उत्पल ने चहकते हुए, प्रसन्नता प्रकट की।

''लेकिन क्या ऐसा सचमुच संभव है दीदी?'' पलक ने शंका प्रकट की। सांत्वना दीदी हँसते हुए बोली– ''नहीं व्यावहारिक रूप से ऐसा संभव नहीं, पर खुशी मनाने के लिए अपना जन्मदिन ही क्यों और भी तो अवसर हो सकते हैं। एक वह पर्व अगले सप्ताह आ रहा है। क्या उसका नाम बता सकते हो?'' इतना कहकर दीदी विद्यार्थियों के चेहरे निहारने लगी। कुछ विद्यार्थियों के चेहरों पर आश्चर्य और अविश्वास के चिन्ह मंडराने लगे।

सबके मन में तीव्र जिज्ञासा थी ऐसा कौन सा पर्व है जिसका आगमन होने वाला है।

बच्चों को शांत देख दीदी ने पुन: पूछा– ''क्या सचमुच किसी को नहीं पता?'' ''जी दीदी! एक त्यौहार ऐसा है जो सृष्टि का जन्मदिन है, वह है नव वर्ष। हिन्दू संस्कृति के अनुसार चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा को मनाया जाने वाला **'गुड़ी पड़वा'** याने भारतीय नव वर्ष।'' कुश ने खड़े होकर बताया।

''बिलकुल सही। तुम्हारा नाम कुश नहीं कुशाग्र

होना चाहिए था।'' सांत्वना ने प्रशंसा के स्वर में कहा। ''दीदी! यह तो हमें भी ज्ञात था।'' कुश की बात सुनने के बाद अनेक विद्यार्थी एक साथ बोल पड़े।

''चलो, यह अच्छी बात है कि तुममें से अधिकांश बच्चों को पता है। बस थोड़ा भ्रम में पड़ गए थे।'' हँसते हुए सांत्वना बोली। ''हाँ दीदी! कई बच्चों ने दोबारा स्वीकार किया।

''अब मुख्य बात, यह बताओ इसे **गुड़ीपड़वा** क्यों नाम दिया गया?'' सांत्वना दीदी ने पूछा तो विद्यार्थीगण बगले झाँकने लगे। ''अरे किसी को नहीं पता? कुश को भी नहीं?'' दीदी ने पूछा। ''दीदी मुझे ठीक से पता नहीं पर इतना ज्ञात है कि उस दिन हर घर में गुड़ी सजाई जाती है।'' कुश ने सकुचाते हुए बताया।

''उत्तर सही है। नववर्ष के अभिनंदन स्वरूप प्रत्येक घर में गुड़ी लगाई जाती है। अब प्रश्न उठता है कि यह गुड़ी आखिर है क्या?'' सांत्वना दीदी ने पूछा।

इस बार फिर विद्यार्थीगण निरुत्तर रह गए। तो दीदी बोली– ''चलो, मैं बताती हूँ। गुड़ी बनाने के लिए एक बाँस को एक दिन पहले हल्दी तेल लगाकर रख दिया जाता है। पड़वा वाले दिन सूर्योदय से पूर्व उसमें रेशमी साड़ी लगाकर उस पर चाँदी, ताँबे या स्टील का कलश लगाकर उसमें कड़वी नीम और मीठे गाँठियों की माला डालकर सजाया जाता है और खुले आसमान में रख दिया जाता है ताकि ऊर्जा प्रदान करने वाले सूर्य की प्रथम रश्मि उस पर पड़े।''

''जी दीदी! उस दिन घर की ध्वजा, पताका, तोरण–वंदनवार, फूलों आदि से सजाया जाता है।'' सिद्धार्थ ने बताया। ''और दीदी! परिवार के सभी सदस्य नीम की कोमल पत्तियों के साथ काली मिर्च, अजवायन, जीरे आदि की गोली बनाकर गुड़ के साथ सेवन करते हैं।'' पारुल ने बताया।

''दीदी! इसमें विलोम चीजों का उपयोग क्यों होता है जैसे कड़वी नीम के साथ मीठे गाँठियों की माला?'' दिवेश ने उत्सुकता प्रकट की।

''वह इसलिए कि नीम खाने से रक्त शुद्ध होता है। त्वचा को रोगों से मुक्ति मिलती है। मीठे गाँठियों की माला सिखाती है कि सदा मीठे बोल बोलो, विपरीत परिस्थितियों में भी कड़वी नीम खाकर, कड़वे बोल सुनकर विचलित न हों।'' सांत्वना दीदी ने समझाया।

''हाँ दीदी! नीम की कड़वाहट पचाने, बुरी यादों, बुरे दिनों को भूलकर मिठास के रस में डूब जाने का प्रतीक है ये गाँठियों या शक्कर की माला।'' कुश ने जोड़ा।

''हाँ, यह संदेश तो मुखारित होता है पर एक बात तुम फिर भूल गए, बता सकते हो क्या?'' मुस्कुराते हुए सांत्वना दीदी ने बच्चों को परखना चाहा। कुश ने त्वरित उत्तर दिया– ''हाँ, संकल्प की, इस पावन अवसर पर हमें कोई न कोई संकल्प अवश्य लेना चाहिए।''

''इस समय भी संकल्प?'' प्रतीक ने मुँह बनाते हुए कहा। शायद कुछ बच्चों को यह रास नहीं आया। ''हाँ क्योंकि नया वर्ष तो नया होता है। मुझे पता है कुछ बच्चों को संकल्प लेना बड़ा मुश्किल काम लगता है।'' सांत्वना ने बच्चों के चेहरे पढ़ते हुए कहा। ''जी दीदी!'' कई विद्यार्थियों ने शांत स्वर में स्वीकार किया।

''इसलिए बच्चों अति उत्साह में आकर कोई भारी भरकम संकल्प मत लो। अपनी क्षमता और सामर्थ्य के अनुसार लो और केवल एक लो। ठीक है, कल अपने संकल्प मुझे अवश्य बताना, बताओगे न?'' सांत्वना दीदी ने पूछा। ''जी दीदी!'' सारे विद्यार्थियों ने एक स्वर में स्वीकारा।

तभी कालांश समाप्ति की घंटी बज गई और बच्चों का धन्यवाद स्वीकारती दीदी कक्षा से बाहर निकल गई।

वैज्ञानिक नववर्ष

– नरेन्द्र देवांगन

खगोल हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है। यह आकाश को जीवनदायी शक्तियों से जोड़ता है। सूर्य पथ के मूलभूत बिन्दुओं का उत्सव मनाने में और कृषि चक्र में मौसम के बदलाव को ध्यान में रख खगोल ही हमारा कैलेंडर तय करता है। संसार भर में लोग सूर्य के मूलभूत बिंदुओं से गुजरने के दिनों को उत्सव के रूप में मनाते हैं। नवरात्र विषुव पर्व हैं तो मकर संक्रांति और प्रयाग का माघ मेला मूलत: उत्तरायण के उत्सव हैं।

आज से ठीक २०७७ वर्ष पहले मालव गणराज्य ने अपने जिस साहस और पराक्रम से शकों को परास्त कर विषय प्राप्त की, उसकी स्मृतियाँ इतनी स्वर्णिम बनी हुई हैं कि आज भी हमारा मस्तक स्वाभिमान से ऊँचा हो जाता है। इस बीच इतनी सदियाँ बीत गई, आक्रांताओं के अधीन रहने का दुर्भाग्य झेलते हुए हम यहाँ तक आ गए, किन्तु आलोक स्तंभ हमारे पूर्वज हिंदू नरेशों ने स्थापित किया, वह आज भी हमें आलोकित करता है, और आगे भी करता रहेगा।

आकाश में होने वाला क्रमवार घटनाक्रम कैलेंडर का आधार बनता है। वैदिक काल में, वर्ष का आरंभ किसी एक मूलभूत बिंदु से होता था। वेदांग ज्योतिष हमारी सबसे प्राचीन खगोल रचना है। इसके रचयिता है लगध तथा काल है ११८० ई. पू.। यह वास्तव में हमारी सबसे प्राचीन जंत्री है, जिसके अनुसार पाँच वर्ष के युग का आरंभ माघ मास की शुक्ल प्रतिपदा से होता है, जब सूर्य और चंद्रमा दोनों धनिष्ठा नक्षत्र में होते हैं और यह समय शीत अयनांत का होता है। वेदांग ज्योतिष की यह पद्धति सातवाहनों के काल २०० ई. तक बनी रही।

विक्रम संवत् ने हमें हिन्दू कैलेंडर ही नहीं दिया, अपितु वर्षभर चलते रहने वाले त्यौहारों की वह सौगात भी दी, जो यदि न होती तो हमारी लोक चेतना न जाने कब टूट कर बिखर जाती। हम जिसे 'विक्रम संवत्' कहते हैं, वह अपने शुरूआती दिनों में 'कृत संवत्' था। कालांतर में उज्जयिनी के मालव नरेशों की लोकप्रियता के चलते वह 'मालव संवत्' के नाम से जाना गया। राजा भोज के समय के आसपास ही विक्रमादित्य के विरुद को अनंतकाल तक जीवंत बनाए रखने के लिए लोगों में विक्रम संवत् प्रचलित हुआ।

वर्ष १००–४०० ई. के समय खगोल ज्ञान में उन्नति हुई, सिद्धांत यानी खगोल गणित का विकास हुआ। सूर्य सिद्धांत भारतीय खगोल में एक प्रमुख ग्रंथ है जो लगभग वर्ष ४०० ई. से प्रकाश में आया। जब पाया गया कि वर्ष अब शीत अयनांत से शुरू नहीं होता, क्योंकि वह बिंदु पीछे खिसक चुका था, खगोल शास्त्रियों ने सुधार करने के लिए वर्ष का आरंभ वसंत विषुव या इसके निकट से कर दिया, जो अब आकाश में कृतिका से खिसक कर इससे दो नक्षत्र पूर्व अश्विनी नक्षत्र के आसपास पहुँच चुका था।

विक्रम संवत् के अतिरिक्त भी कई संवत् प्रचलन में हैं, जिनमें सप्तर्षि संवत्, युधिष्ठिर संवत्, वीर संवत्, बुद्ध निर्वाण संवत् प्रमुख हैं। किन्तु विक्रम संवत् की प्राण शक्ति और चमक सबसे निराली है। इस संवत् के मास, पक्ष और तिथियों का आधा अधूरा ज्ञान होने के बाद भी नई और पुरानी पीढ़ी के लोग विक्रम संवत् के साथ हृदय से जुड़े हुए हैं। हमारे धार्मिक रीति–रिवाज, जन्म–विवाह–मृत्यु से संबंधित सामाजिक आचार–विचार,

दशहरा, दीपावली, होली, रक्षाबंधन सहित सारे पर्व और त्यौहार जिस तिथिपत्र के अनुसार मनाए जाते हैं, वह विक्रम संवत् पर ही निर्भर है।

भारतीय पंचांग दो प्रकार है सौर और चांद्र, जिनके आरंभ अलग-अलग दिनों में होते हैं। हिन्दू धार्मिक कैलेंडर चांद्र-सौर है। यहाँ मौसम सूर्य के चलन के अनुसार हैं तो तिथियाँ और त्यौहार चंद्रमा के चलन के अनुसार, जो सौर कैलेंडर (तिथि दर्शक) के साथ जुड़ा रहता है। एक चांद्र मास दो पक्षों का होता है, जिसमें दिनों को तिथियों से गिना जाता है। इसके विपरीत सप्ताह के दिनों को ग्रहों का नाम दिया गया है। पूर्व में हमारी कुल-मर्यादाएँ विक्रम संवत् से बंधी हुई थीं। सम्राट विक्रमादित्य से लेकर राजा भोज के काल तक की लगभग १० सदियों में मालव के लोग जिस ऊँचाई पर थे, वह भारतीय इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में अंकित है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि काल के प्रवाह में विक्रम संवत् आधुनिक हैं, क्योंकि इससे पहले वैदिक युग से लेकर उपनिषद काल तक और रामायण-महाभारत काल से लेकर प्रियदर्शी अशोक के काल तक कई संवत् हुए, जिनमें से कुछ के नाम बचे हुए हैं तो कुछ के काम। वैदिक साहित्य से लेकर अब तक समय को जानने-बूझने के लिए काल की गिनती करने के लिए वैज्ञानिक तौर पर एक अवधि निश्चित की गई। इस अवधि के हिसाब से समय की सबसे बड़ी इकाई 'कल्प' है।

इसी क्रम में एक इकाई 'संवत्सर' के रूप में मानी गई। संवत्सर के बाद अवरोही क्रम से अयन, ऋतु, मास, पक्ष, अहोरात्र, घंटा आदि हैं। इन सारी गणनाओं के होने पर भी किसी खास अवधि को जानने में संवत्सर अर्थात वर्ष का महत्व ही सर्वाधिक होता है। विक्रम संवत्सर का हमसे केवल बाहरी ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक जुड़ाव भी है। किसी भी धार्मिक मान्यता में संवत्सर या मास की गणना करने में कहीं सूर्य की तो कहीं चंद्रमा की गति को कारण माना जाता है। इसलिए वहाँ यह समस्या है कि लगभग हर एक महीने में कभी दिन कम पड़ जाते हैं तो कभी अधिक।

इसके ठीक विपरीत भारतीय संवत्सर में सूर्य और चंद्रमा दोनों ही काल गणना में सहायक है। चंद्र तथा सौर मास, दोनों ही काल गणना में मुख्य हैं। अत: तिथियों का निर्धारण सूर्य और चंद्र दोनों की गति से होता है। पूर्णिमा चंद्रमा के परम विकास को प्रकट करती है तो अमावस्या उसके अभाव को। १२ राशियों में सूर्य प्रत्येक राशि में एक मास तक रहता है। अत: उसे एक चक्र पूरा करने में पूरे १२ महीने लगते हैं, जो एक संवत्सर हो जाता है।

संवत्सर का काल क्रम और काल गणना युगादि संवत्, श्रीराम राज्य संवत्, युधिष्ठिर संवत्, विक्रम संवत् और शक संवत् से होती है। एक संवत्सर पूरा एक वर्ष माना जाता है। इसमें चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन पूरे बारह महीने होते हैं। वैदिक मासों के नाम अलग हैं। प्रत्येक मास दो पक्षों में बँटा होता है।

प्रत्येक पक्ष में १५ तिथियाँ होती हैं। दो पक्ष कृष्ण और शुक्ल कहलाते हैं। ६० संवत्सर पूरे होते ही फिर से संवत् का क्रम प्रारंभ हो जाता है। इन संवत्सरों को तीन समान भागों में बाँटा गया है। ये तीन भाग हैं ब्रह्मा विंशति, विष्णु विंशति तथा रुद्र विंशति। प्रत्येक विंशति में २० संवत्सर होते हैं।

वैदिक गणित की यही अमर परंपरा सारे संसार में मानी जाती है। जैन, बौद्ध तथा सिख परंपरा में तिथि, मास और वर्ष इसी संवत्सर के आधार पर चलते हैं। त्यौहार भी इसी संवत्सर के सहारे चलते हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि हमारी प्रकृति और उसके अनुरूप सारे आहार-विहार इस संवत्सर के हिसाब से ही निर्धारित हैं। सही मायने में वास्तविक व वैज्ञानिक नववर्ष यही है।

– खरोरा (छ. ग.)

पृथ्वी दिवस

कथा: चंदा सिंह
चित्र: देवांशु वत्स

नव संवत् का राग

– डॉ. हरीश निगम

नयी उमंगें, नयी तरंगें,
नये बनाएँ मीत।
खुशी मनाएँ, फिर से गाएँ,
नव संवत का गीत।।
बीती रातें, बीती बातें,
नहीं करेंगे याद,
दूर छलों से, नये पलों से,
खूब करें संवाद।।
छोड़ निराशा, पालो आशा,
नये वर्ष का राग,
फिर मस्ती का, हँसी–खुशी का,
बिखरे सदा पराग।।

– सतना (म. प्र.)

नव विक्रम संवत्सर

– गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

भारतीय संस्कृति और प्रकृति का, परिचायक है संवत्।
वीर विक्रमादित्य नाम से, ख्यात है विक्रम संवत्।।
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा दिवस से, है संवत् प्रारंभ।
कहते हैं प्रथम दिवस को, सृष्टि हुई आरंभ।।
संवत्सर के एक वर्ष में, होते हैं दो पूर्ण अयन।
छह–छह मास सूर्य रहता है, उत्तरायण और दक्षिणायन।।
एक वर्ष के पूर्ण चक्र में, मासों की संख्या बारह।
वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर हैं ऋतुएँ छह।।
शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष, होते दो पक्ष प्रत्येक मास।
वैज्ञानिक शुद्ध कालगणना, संवत् देता है सत्यभास।।
भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय, राष्ट्रीय धार्मिक संवत्सर।
भारतीय संस्कृति के मूर्तरूप, विक्रमादित्य का नाम अमर।।
विक्रमादित्य थे धीर–वीर, विद्वान, न्यायप्रिय जननायक।
है नमन तुम्हें भारत सपूत, हे! आयुर्वेद कला साधक।।

– लखनऊ (उ. प्र.)

नव वर्ष

– सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा'

हरी भरी हो अपनी धरती, बहे हवा हर दु:ख को हरती,
दिन में रवि किरणें सुखकर हों, रहे चाँदनी निशि में झरती।
सदा चमन में खुशियों की हो, चिड़िया रहे चहकती,
नए वर्ष की भीनी खुशबू, हर पल रहे महकती।।

रहें सभी आपस में मिलकर, सद्भावों के फूटें निर्झर,
खुशहाली की गंगा आए, दीन दु:खी पीड़ित जन के घर।।
मानव–मन में बन्धु भाव की फसलें रहें लहकती,
नए वर्ष की भीनी खुशबू हर पल रहे महकती।।

घना तिमिर चाहे हो मग में शूल चुभें कितने ही पग में,
लक्ष्य प्राप्ति की लेकिन आशा पलती रहे हमारे दृग में।।
तूफानों में संघर्षों की ज्वाला रहे दहकती,
नए वर्ष की भीनी खुशबू हर पल रहे महकती।।

नहीं किसी से वैर भाव हो, घृणा, युद्ध के नहीं घाव हो,
शांति, सौख्य, विश्वास, प्रेम का जग में नित बढ़ता प्रभाव हो।।
भौतिकता में सुप्त मनुजता, अब ना रहे बहकती।
नए वर्ष की भीनी खुशबू, हर पल रहे महकती।।

– कोटा (राजस्थान)

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'नववर्ष' विषय पर अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

नववर्ष का स्वागत

– राजेश गुजर

नए वर्ष का स्वागत विश्व के हर कोने में अपने–अपने ढंग से होता है। नए वर्ष के आने की प्रसन्नता में समस्त मानव समुदाय एक नए उत्साह से सराबोर होता है। ऐसे में सभी अपनी–अपनी परंपराओं एवं प्रथाओं के अनुरूप इसका स्वागत करते हैं। प्रस्तुत है विभिन्न देशों में भिन्न–भिन्न ढंग से मनाए जाने के तरीके।

ब्रिटेन में नया वर्ष पारंपरिक एवं सामाजिक तौर तरीकों से मनाया जाता है। ब्रिटिश लोग इस अवसर पर खूब आनन्द मनाते हैं। केक, पेस्ट्री, बाँटते हैं। मस्ती में अपने–अपने साथी के साथ नाचते हैं।

इटली के लोग चितकबरी, आकर्षक पोषाकें पहनकर खुशियाँ मनाते हैं और एक–दूसरे को बधाइयाँ देते हैं। राजधानी वेटिकन सिटी में इस अवसर पर अनेक धार्मिक कार्यक्रम होते हैं।

जर्मनी में नए वर्ष के मनाने के लिए प्रत्येक पिता अपनी पुत्रियों को १ हजार पिन या इसके बराबर कीमत के उपहार भेंट करता है। इसी कारण वहाँ इस पर्व को **'पिनपिनी'** नाम से जाना जाता है। इसे वे सुख–समृद्धि का सूचक मानते हैं।

ईरान में लोग बड़े रोचक ढंग से नववर्ष का स्वागत करते हैं। नववर्ष के उत्सव से १५ दिन पूर्व गेहूँ व जौ के बीज बोए जाते हैं और उन्हें अंकुरित होने दिया जाता है। परंपरा अनुसार नववर्ष के दिन इनको प्याले में डालते हैं, ऐसा करना शुभ माना जाता है।

दक्षिण अफ्रीका में नए वर्ष के दिन नवविवाहितों को खूँखार साँड से लड़ने के लिए छोड़ दिया जाता है, जिसे नवविवाहित पति पत्नी मारकर अपने इष्ट देव को चढ़ाते हैं मान्यता है कि ऐसा करने से रोगमुक्ति का लाभ होता है।

जापान में नववर्ष को खुशियों के त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। लोग तरह–तरह के व्यंजन बनाते हैं और घरों को बाँस व चीड़ की लकड़ियों से सजाते हैं। परंपरागत पोशाकें पहनकर लोग व्यंजनों का आनंद लेते हैं व एक–दूसरे को यादगार वस्तुएँ भेंट करते हैं। यह उत्सव ५ दिन तक चलता है।

सुबह से ही लोग नदियों व कुओं से स्वच्छ जल लाकर चावल का व्यंजन बनाते हैं और उसको कमल की जड़ के साथ सेवन करते हैं। उनकी मान्यता है कि ऐसा करने से व्यक्ति की आयु में वृद्धि होती है।

रोम में नववर्ष के अवसर पर उपहार बाँटने की परंपरा है। इस दिन यहाँ आतिशबाजी के धमाकों से आकाश गूँज उठता है।

स्कॉटलैंड में नववर्ष के प्रथम दिवस को लोग **'डेसले डे'** कहते हैं। ३१ दिसम्बर की रात को लोग अपने घरों में सपरिवार एकत्रित हो जाते हैं। और आने वाले पहले मेहमान की प्रतीक्षा करते हैं। उस मेहमान के आते ही सभी उसके स्वागत सत्कार में जुट जाते हैं। ये लोग प्रथम मेहमान को स्वास्थ्य, सुख और समृद्धि का सूचक मानते हैं।

चीन में इस दिन रातभर जागरण होता है व खूब

आतिशबाजी की जाती है। दूसरे दिन सभी को पकवान खिलाए जाते हैं। सर्व प्रथम बुद्ध की वंदना अर्चना की जाती है। उसके बाद एक–दूसरे पर होली की तरह सादा जल डाला जाता है। जिसे लोग **'छपाका'** कहते हैं।

मान्यता है कि 'छपाका' मनुष्य को स्वस्थ रखता है।

स्पेन में इस दिन रात के १२ बजे के बाद १ दर्जन ताजा अंगूर खाने की परंपरा है। उनकी मान्यता है कि ऐसा करने से वे वर्षभर स्वस्थ रहेंगे।

म्यांमार में नववर्ष का उत्सव ३ दिन तक मनाया जाता है, इसे 'तिजान' के नाम से जाना जाता है। इस दिन वहाँ लोग बुद्ध की प्रतिमा पर सुगंधित जल की वर्षा करते हैं इसके बाद मिठाई बाँटकर खुशी व्यक्त करते हैं।

मलेशिया, चिली, थाईलैण्ड, सुमात्रा आदि देशों में नागरिक सुख समृद्धि की कामना करते हैं।

महिलाएँ सुहाग का प्रतीक वस्तुओं का आदान–प्रदान कर सुख समृद्धि की कामनाएँ करती हैं।

यूगोस्लाविया में नए वर्ष का उत्सव यहाँ नाच–गाने के साथ दीवाली की तरह खूब पटाखे व आतिश–बाजी की जाती है। जिसमें बच्चे–बूढ़े सभी भाग लेते हैं। किसान समुदाय तो इसे विचित्र ढंग से मनाता है वह सूअर की पूँछ पकड़कर घर के प्रत्येक सदस्य को छुआते हैं। उनकी मान्यता है कि इससे घर में सुख शांति आती है।

अपने देश में भी अंग्रेजी नववर्ष १ जनवरी का स्वागत उत्सवपूर्ण वातावरण में किया जाता है। लोग खूब पटाखे चलाते हैं, मौज मस्ती में झूमते हैं। इस अवसर पर लोग सार्वजनिक स्थलों पर पिकनिक मनाने के लिए जाते हैं। परन्तु दु:ख तब होता है, जब लोग शराब पीकर दुर्घटना के शिकार होते हैं।

वस्तुत: यह हमारा मूल भारतीय नववर्ष है ही नहीं। **भारतीय नववर्ष होता है चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को। जिसे हम नवसंवत्सर के रूप में मनाते हैं।**

नववर्ष वर्ष प्रतिपदा हमारी धरती माँ का भी जन्मदिन है अत: हम उन्हें उपहार के रूप में संकल्पों की भेंट दें संकल्प जैसे– पर्यावरण की रक्षा करेंगे। पोलीथीन का उपयोग नहीं करेंगे। प्राकृतिक संपदाओं वनों एवं खनिजों तथा पेट्रोलियम पदार्थों का अत्यावश्यक उपयोग ही करेंगे और प्रतिवर्ष उन्हें हरियाली की नई साड़ी भेंट करेंगे।

इस दिन हम सूर्य को अर्घ्य चढ़ाकर, शंखनाद व परस्पर तिलक लगाकर, गुढ़ी सजाकर और नीम की पत्तियाँ व मिश्री तथा श्रीखण्ड खाकर प्रकृति के प्रति धन्यवाद व उल्लास प्रकट करते हैं।

– महेश्वर (म. प्र.)

यह मिठाई क्यों खाएँ?

– मदनगोपाल सिंघल

२२ जून १८९७ को इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया के राज सिंहासन पर आसीन होने के साठ वर्ष पूरे हुए थे अत: उस दिन उन दिनों के हमारे विदेशी शासकों के आदेश से देश में विभिन्न उत्सवों के आयोजन किये गये, गाँव–गाँव में उत्सव हुए। बाजार सजाये गए और आतिशबाजियाँ की गईं।

शिक्षा विभाग के आदेश पर विद्यालयों में ये उत्सव हुये। वहाँ भी झण्डे लगाये गये। 'गॉड सेव दी किंग' के गाने गाये गये और अन्त में बालकों को मिठाइयाँ भी बाँटी गईं।

छोटे बच्चों को तो मिठाइयों का आकर्षण रहता ही है अत: वे मिठाइयों के पुड़ों को हाथ में लिये हुये आनंद से नाचते–कूदते अपने–अपने घरों की ओर लौट पड़े। उन्हीं में वह बालक भी था। ८–९ वर्ष की अवस्था थी उसकी। उसके हाथ में भी मिठाई थी किन्तु उसकी मुख मुद्रा अत्यन्त ही गंभीर थी। वह बार–बार उस मिठाई के पुड़े की ओर देख रहा था और न जाने क्या सोच रहा था।

बालक का घर निकट आया तो उसने उस पुड़े को बाहर ही कूड़े के एक ढ़ेर पर फैंक दिया और तब एक संतोष की श्वास लेकर वह घर के अंदर घुसा। उसके बड़े भाई ने उसकी ओर देखा तो उसके मुख मण्डल की गम्भीरता उनसे छिपी न रह सकी।

''क्यों क्या बात है रे!'' उन्होंने उससे पूछा– ''क्या तुझे मिठाई नहीं मिली?''

''मिली तो थी।'' बालक ने उत्तर दिया– ''किन्तु मैंने उसे कूड़े में फेंक दिया।''

''क्यों, तूने उसे खाया क्यों नहीं?'' भाई ने पुन: प्रश्न किया।

''इसलिये कि उस पर गुलामी की छाप लगी हुई थी भैया!'' बालक ने उत्तर दिया– ''जिन्होंने हमारे देश को जीता उसके राजा के समारोह का आनंद हम क्यों मनायें?'' और यह कहता–कहता बालक घर के अन्दर चला गया। इतना स्वाभिमानी और अपने देश का प्रेमी था वह बालक।

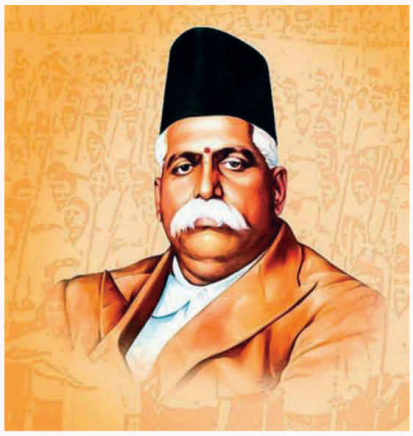

जानते हो वह कौन था? उसका नाम था केशव जिन्हें आज सब कोई **डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार** के नाम से जानते और पहचानते हैं। **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** के संस्थापक, जिनसे अनुप्राणित और संस्कारित होकर देश के लाखों–लाखों नवयुवक आज राष्ट्र की आराधना में तल्लीन हैं। –

उलझ गए! 25

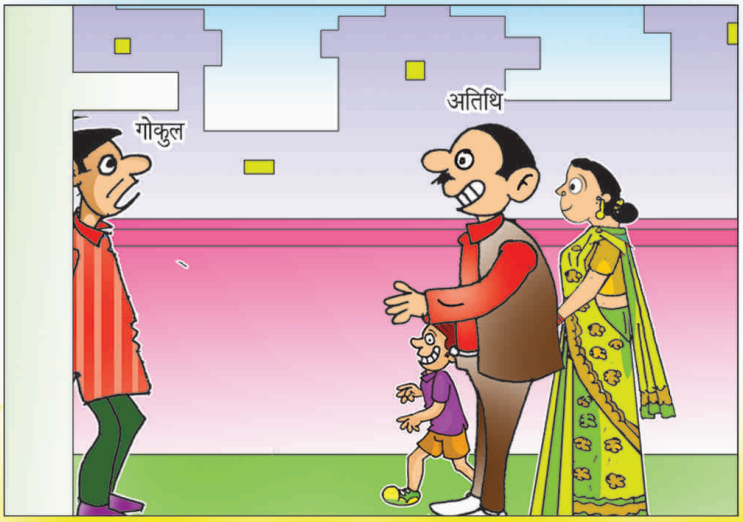

गोकुल के घर आए अतिथि ने बताया–'मैं आपके पड़ोसी वर्मा जी के साले की मां के इकलौते दामाद के मामा के ससुर की बेटी का दामाद हूं!' वर्मा जी और घर आए अतिथि में क्या रिश्ता है?

उत्तर: अतिथि वर्मा जी की ममेरी बहन का पति है।

अप्रैल फूल बनाया

– हरिन्दर सिंह गोगना

नकुल का आज अंतिम प्रश्नपत्र था। वह पर्चा देने के बाद घर लौटा तो दादा–दादी को गाँव से आये देख प्रसन्नता से उछल पड़ा। दादा–दादी उसे कुछ दिनों के लिए अपने साथ ले जाने के लिए आये थे। नकुल का अपने दादा–दादी के पास गाँव में बहुत मन लगता था। विशेषकर गाँव का खुला वातावरण तो उसे अपार शांति देता था।

गाँव आकर नकुल अपने दादा–दादी के साथ अधिक समय बिताता था। उनसे कहानियाँ किस्से सुनता। एक दिन तो दादा–दादी उसे पास के गाँव में मेला दिखाने के लिये ले गये। मेले में नकुल ने बहुत मस्ती की।

नकुल को कल वापस माता–पिता के पास शहर लौटना था। फिर उसका परीक्षाफल भी कल ही आना था। रात को नकुल ने दादी से खूब बातें की। रात बहुत हो चुकी थी तो दादी ने नकुल को सो जाने के लिए कहा और स्वयं भी सो गई। सोने से पहले नकुल को एक शरारत सूझी। सोचा कल पहली अप्रैल यानि मूर्खों का दिन है। क्यों न दादी को ही फूल बनाया जाये। फिर उसने दादी के सिरहाने रखी अलार्म टेबल घड़ी के समय से छेड़छाड़ की ताकि वह सुबह देरी से बजे और दादी भी देर से जागे। फिर वह दादी को वास्तविकता बतायेगा तो आनंद आयेगा। क्योंकि दादी मेले से जो अलार्म टेबल घड़ी लाई थी उसी के अलार्म से सुबह जल्दी जागती थी।

लेकिन सुबह जब नकुल जागा तो हैरान हुआ। कि दादी तो घर का सारा काम निपटाकर दादाजी के पास बैठी समाचार–पत्र पढ़ रही थी।

''दादी! तुम कब जागी?''

''मैं तो अपने समय पर ही उठ गई थी। लेकिन किसी ने मेरी घड़ी के साथ छेड़छाड़ की थी।'' दादी ने चश्में से नकुल की तरफ झाँकते हुए कहा तो वह उनसे आँखें चुराने लगा। मन ही मन सोच रहा था। दादी ने तो उसकी चाल पर पानी फेर दिया। वह तो बड़ी चालाक हैं।

तभी दादी के मोबाइल फोन की घंटी बजी तो उन्होंने फोन कान पर लगाते हुए नकुल की ओर देखते हुए कुछ आश्चर्य से कहा– ''क्या कह रहे हैं आप..... नकुल और फेल.. यह कैसे हो गया...?'' और फिर फोन बंद कर वह नकुल की ओर उदास दृष्टि से देखने लगी। अब तक नकुल ने सुना तो वह उत्सुकता से दादी के पास आकर बोला– ''क्या हुआ दादी..! मैं फेल.. किसका फोन था?''

''तुम्हारे पिता बोल रहे थे। कह रहे थे कि तुम्हारा परीक्षाफल पता लगाया है। तुम थोड़े अंकों के अंतर से

अनुत्तीर्ण हो गये हो।'' दादी ने कहा।

''नहीं... यह कैसे हो सकता है? मैंने तो पूरी मेहनत से परीक्षा दी थी। अवश्य कहीं कोई गड़बड़ है। अब मैं माता–पिता और मित्रों को क्या मुँह दिखाऊँगा? दादी! मैं आज तो शहर नहीं जाऊँगा।'' कहकर नकुल की आँखों में आँसू छलक आये।

तभी उसके दादा जी उसके पास आए और बोले– ''इधर देखो नकुल...!'' नकुल ने दृष्टि उठाकर देखा तो दादा जी ने उसके सामने मोबाइल करते हुए वाट्सएप में देर रात को आए उसके पिता का संदेश दिखाया। जिसमें लिखा था ''नकुल उत्तीर्ण है, सबको बधाई।''

''लेकिन अभी–अभी जो फोन आया?'' तभी नकुल ने थोड़ी हैरानी से दादी की ओर देखते हुए कहा।

''अरे नहीं बाबा! मैंने तो विनोद किया था। यह फोन अभी–अभी तेरे दादाजी से ही स्वयं को करवाया था ताकि तुम्हें बात में सच्चाई अनुभव हो। और मैं उन्हीं से बात कर रही थी न कि तुम्हारे पिता से। इसे कहते हैं अप्रैल फूल बनाना। कहो कैसा लगा?'' तभी दादी ने नकुल के निकट आकर उस पर हँसते हुए कहा।

''आप तो चालाक हो दादी!'' नकुल अपने आँसू पोंछता हुआ मीठी मुस्कुराहट के साथ बोला।

''तो क्या चालाकी तुम्हें ही आती है। रात तुमने जो घड़ी से छेड़छाड़ की वह मुझे पता था। इसीलिए तुम्हें अप्रैल फूल बनाने के लिए हमने यह योजना बनाई।'' दादी ने हँसते हुए नकुल को गुदगुदी करते हुए कहा तो वह भी हँसकर दादी से लिपट गया।

– पटियाला (पंजाब)

संस्कृति प्रश्नमाला

- *मरणासन्न रावण के पास राजनीति का ज्ञान लेने के लिए कौन गये थे?*
- *महाभारत युद्ध में श्री कृष्ण से सहायता माँगने पाण्डवों की ओर से द्वारका कौन गया था?*
- *बोरोबुदूर नाम का विश्व का सबसे बड़ा बौद्ध मंदिर किस देश में है?*
- *स्वामी विवेकानन्द का प्रसिद्ध शिला स्मारक कहाँ पर है?*
- *वर्तमान वैवस्वत मन्वन्तर का कौन सा कलियुग चल रहा है?*
- *औरंगजेब के बन्दीगृह से बड़ी चतुराई से शिवाजी निकल गये थे। औरंगजेब ने उन्हें कहाँ बन्दी बना कर रखा था?*
- *अरब और यूरोपीय देशों में जो तलवारें बनती थीं उनमें कहाँ का शुद्ध लोहा काम आता था?*
- *स्वातंत्र्य यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति देने वाले चाफेकर बन्धुओं ने क्रांतिकारियों को संगठित करने के लिये कौन सी संस्था बनाई?*
- *महाभारत काल में सपादलक्ष (नागौर) किस राज्य का अंग था?*
- *विश्व हिन्दू परिषद ने भव्य श्रीराम मंदिर निर्माण को लेकर देशभर के कितने गाँवों में 'राम उत्सव' मनाने की योजना बनाई है?*

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

बुद्धू कौन?

चित्रकथा : देवांशु वत्स

तीर्थ यात्रा

– गोपाल माहेश्वरी

आज रामनवमी थी चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी भगवान श्रीराम का जन्मोत्सव दिवस। सारा घर आँगन पूजा की गंध से गमक रहा था। सारा परिवार ही नहीं अड़ौस–पड़ौस के लोग भी एकत्र थे। भगवान श्रीराम की सुन्दर झाँकी सजाई हुई थी और भक्तों की इस भीड़ में दादी सुमधुर कंठ में तुलसी की चौपाईयाँ गा रहीं थीं।

नौमी तिथि मधुमास पुनीता।
सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता।।
मध्य दिवस अति सीत न घामा।
पावन काल लोक विश्रामा।।

और फिर सबने सामूहिक स्वरों में गाया। **'भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी'** सबने आरती की, प्रसाद में हथेली भर–भर के पंजीरी पाई और अत्यन्त आनन्द उमंग के साथ राम जन्मोत्सव सम्पन्न हुआ। परीक्षाएँ हो जाने से राघवी भी दादी के यहाँ गाँव आई हुई थी। ऐसा उत्सव अपने घर आँगन में मनाते हुए वह आनन्द विभोर हो चुकी थी।

''क्यों बिटिया! कैसा लगा जन्म उत्सव रामलला का?'' दादी ने पूछा। उत्सव में भागदौड़ थोड़ी अधिक हो जाने से वे हल्की थकान अनुभव कर लेट गईं थीं। उनका पोता सौमित्र उनके पैर दबाने लगा तो राघवी भी अपने भाई के पास आ बैठी। राघवी ने भी दादी के पैरों की ओर हाथ बढ़ाए तो दादी ने उसे संकेत से रोककर यह बात छेड़ दी।

''सचमुच दादी ऐसा आनन्द कभी नहीं आया ऐसा लगा जैसे हम साक्षात अयोध्यापुरी में राजा दशरथ के राजभवन में माँ कौशल्या के कमरे के बाहर ही खड़े हैं।'' राघवी पुलकित स्वरों में बताने लगी।

''और तुम्हें कैसा लगा मेरे लखनलाल?'' सौमित्र को दादी प्यार से लखन ही कहती हैं।

''सच कहूँ दादी! पिताजी ने जब आप और दादाजी के साथ अयोध्या नगरी की यात्रा पर मुझे साथ भेजने को कहा था मैं मन ही मन खीज उठा सोचा मित्र पूछेंगे छुट्टी में कहाँ घूमने गया था तो क्या कहूँगा? सारे मित्र उपहास करेंगे?.... मैं तो साफ–साफ मना करने की सोच रहा था। पर अब...''

''अब क्या? नहीं चाहते तो मत चलो।'' दादी ने दुविधा दूर करना चाही।

''दादी! पिछले नौ दिनों से आपने रामायण की जो कथाएँ सुनाई हैं और आज रामजन्म का जो प्रसंग हमने मनाया मुझे लगता है इस पावन पुरी को न देखा तो भारत में रहने का क्या लाभ?'' सौमित्र बोला।

''मतलब, अयोध्या न गए तो भारत में रहना व्यर्थ है!'' राघवी ने तर्क किया।

''नहीं पर हमारी जिन सांस्कृतिक विशेषताओं से हमारा देश सारे विश्व में आदर से देखा जाता है उनमें हमारे ये तीर्थ स्थल भी है फिर वे अयोध्या हो मथुरा, काशी, सारनाथ, अमरनाथ, पावापुरी या अमृतसर। इन्हें भारत में रहकर भी न देखना, इनके सम्बन्ध में न जानना यह भारत में जन्म लेने का अपमान है। दादी ने बताया।

''लेकिन दादी! मेरे सारे मित्र अधिकतर प्रसिद्ध पर्वतीय स्थलों या समुद्री किनारों पर घूमने जाते हैं या महानगरों चैन्नई, मुम्बई, बैंगलुरू या कोलकाता आदि देखने। मैं उन्हें बताऊँ कि मैं इस वर्ष अयोध्या गया था या उज्जैन तो हँसेंगे वे मुझ पर।'' सौमित्र ने अपना तर्क दिया। बात का मनोवैज्ञानिक आधार भी था।

दादी ने समझाना शुरू किया– ''देखो बेटा! अधिकतर वे स्थान जो प्राकृतिक सुन्दरता से परिपूर्ण होने से प्रसिद्ध हैं वे प्राय: अंग्रेजों द्वारा खोजे गए हैं और कुछ मुगलकालीन खोज है। हर व्यक्ति का अपना

दृष्टिकोण, अपनी रुचि। वे बाहर से आए आक्रमणकारी थे। वे ऐसी पर जाकर उन्हें क्यों प्रसिद्ध करते जिनमें भारतीयों की प्रतिष्ठा छुपी थी। अंग्रेज ठण्डे प्रदेश से आए थे अत: पहाड़ों में घूमने जाते थे या विदेशों जैसा मुक्त आचरण जिसमें न हमारे देश जैसी लज्जा होती है न मर्यादा, वह मौज मस्ती करने के लिए समुद्र किनारे। मुगलों ने अलग दृष्टिकोण से काम किया। परम्परागत भारतीय प्रसिद्ध स्थलों, तीर्थों आदि को नष्ट–भ्रष्ट किया और अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए नई इमारतें खड़ी कर दी।'' दादी आवेश में कहे जा रही थीं मानो ये शब्द उनकी आत्मा से निकल रहे हों।

सौमित्र ने बीच में टोका– ''लेकिन दादी! आज भी ऐसी जगहों पर कितनी भीड़ होती है।''

दादी ने कहा– ''होती है, शासकों का अनुसरण करना प्रजा का स्वभाव होता है लेकिन वे यह भूल गए कि वे शत्रु शासकों की नकल कर रहे हैं।''

राघवी ने कहा– ''पर अब तो हम स्वतन्त्र हैं?''

दादी बोली– ''वही तो अब हमें सोचना चाहिए कि हमारे प्राचीन गौरव स्थलों, तीर्थों, ऐतिहासिक स्थानों की यात्राएँ ही हममें नए भारत को गौरवपूर्ण स्थान दिलाने की ऊर्जा भर सकती है। हमारे सांस्कृतिक गौरव को पुन: जाग्रत कर सकती हैं। राष्ट्र की प्रगति के लिए इस गौरव की बड़ी आवश्यकता है। विवेकानन्द, शंकराचार्य हों या महात्मा गांधी, गोलवलकर ऐसे अनेक महापुरुषों ने देश को ऐसे ही जाना और हमने देखा भारत की जैसी सेवा कर सकें कोई नहीं कर सका।''

''ओह! दादी मैं नहीं जानता था इतना महत्व है इन तीर्थ यात्राओं का। मैं तो समझा था यह बूढ़े लोगों के मन बहलाव का एक साधन भर है जहाँ वे पूजा–पाठ करते रहें।'' सौमित्र ने कहा।

दादी ने सिर पर हाथ फेरते हुए कहा– ''बेटा! आजादी की एक लड़ाई हमारी पीढ़ी ने लड़ी इसकी तो तुम्हें ही लड़ना है।'' यह कहते हुए उनकी आँखों में आँसू भर उठे थे।

– इन्दौर (म. प्र.)

गुप्त गोदावरी

– अरविंद कुमार 'साहू'

उत्तर भारत के अवध क्षेत्र में श्रीराम वनवास से जुड़े कामदगिरि पर्वत (चित्रकूट धाम) में दीपावली पर दीप जलाने की प्राचीन परम्परा है। धार्मिक आस्था और विशिष्ट पर्यटन से जुड़े इस पर्वतीय क्षेत्र का आधा हिस्सा मध्यप्रदेश के हरे–भरे जंगलों में पड़ता है, जो बहुत ही सुरम्य और मनोहारी है। अत: इस बार हमने भी यहाँ दीपदान और आसपास भ्रमण की योजना बनायी।

नियत दिन सड़क मार्ग से तड़के हमारी यात्रा प्रारम्भ हुई तो कई जिलों की सीमाओं से गुजरते व गंगा, यमुना और मन्दाकिनी नदियों के दर्शन करते हुए प्रात: ८ बजे हम कामदगिरि पर्वत पर विराजमान भगवान कामतानाथ के मंदिर में दर्शन हेतु उपस्थित हो गये। पौराणिक आस्था व विश्वास है कि यहाँ वनवास के समय भगवान राम ने देवी सीता व अनुज लक्ष्मण समेत अनेक वर्ष व्यतीत किये थे। प्रमुख मंदिर में दर्शन और दीपदान के पश्चात हमने श्रद्धापूर्वक नंगे पाँव ही कई किलोमीटर लम्बे वृत्त में स्थित कामदगिरि पर्वत की परिक्रमा की।

मेरे मन में धार्मिक आस्था के साथ ही नये स्थान को जानने का कौतूहल और पर्यटन भाव भी था, इसलिये रास्ते में पड़ने वाले विभिन्न धार्मिक स्थलों, पुस्तकों व पूजा सामग्री की दुकानों, हल्के–फुल्के नाश्ते के रेस्टोरेंट, जड़ी–बूटियों से बने स्थानीय उत्पाद, दर्द निवारक तेल के भोंपुओं के साथ चीखने वाले स्टालों को भी ध्यान से देखते गये। परिक्रमा पथ पर चलते हुए हमने अपने वृद्ध पिताजी के लिये उपहार व प्रसाद के रूप में बेंत की एक छड़ी भी खरीदी तथा अपने कौतूहल व स्वाद के लिये वहाँ बिकने वाले कन्दमूल व जंगली बेर भी चखे। परिक्रमा पूरी करके पुन: मंदिर में दर्शन व प्रसाद लेकर हमने एक स्थान पर जलपान किया।

हमें पता था कि चित्रकूट धाम में इसके अतिरिक्त स्फटिक शिला, गुप्त गोदावरी, सती अनुसूया आश्रम और हनुमान धारा जैसे अनेक सुरम्य दर्शनीय स्थल हैं। अत: इसके बाद हम अगले प्रमुख पड़ाव गुप्त गोदावरी के लिये बढ़ चले।

गुप्त गोदावरी एक अत्यन्त मनोहारी प्राकृतिक स्थल है, जो मध्यप्रदेश में पड़ता है। यहाँ एक ऊँचे पर्वत की संकरे रास्ते वाली गुफा के भीतर कई व्यक्तियों के रहने योग्य पर्याप्त स्थान है और उसी के बीच बहता हुआ एक अद्भुत जलस्रोत भी है। अद्भुत इसलिये कि इस ऊँचे पर्वत पर स्थित इस प्राकृतिक जलधारा के उद्गम स्थल का आज तक सही पता नहीं चला। इस स्रोत से निकलने वाली जलधारा इसी गुफा में कई रास्तों से किसी पतली नहर की तरह बहते हुए अंतत: गुफा के बाहर एक पीपल के पेड़ के नीचे स्थित कुण्ड में समाहित हो जाती है। कुण्ड में समाहित होने के बाद यह भी नहीं पता चलता कि आखिर यह पानी आगे कहाँ लुप्त हो जाता है। इसीलिये इसको **'गुप्त गोदावरी'** कहा जाता है।

माना जाता है कि इस गुफा में भी प्रभु श्रीराम ने वनवास के कुछ वर्ष व्यतीत किये थे। किंवदंती है कि प्रभु के सुरक्षित निवास के लिये देवताओं ने इस गुफा की खोज की थी और इसे रहने योग्य बनाया था।

यहाँ पहुँचकर हमने प्रशासनिक व्यवस्था द्वारा दिये गये टिकट खरीदे, फिर पर्याप्त सीढ़ियाँ चढ़ते हुए ऊपर गुफा तक पहुँच गये। यहाँ पहाड़ की चट्टानों के बीच पतले दर्रे जैसे संकरे और एकमात्र गुफाद्वार को देखकर हम रोमांचित हुए बिना न रह सके। यहाँ एक बार में एक से अधिक व्यक्ति के निकलने की जगह (चौड़ाई) ही नहीं थी, इसलिये प्रवेश व निकास की भीड़ को देर तक रोककर बारी-बारी से आने व जाने दिया जाता था। जिसके चलते द्वार के आगे-पीछे भीड़ का दबाव रहा और हमें देर तक प्रतीक्षा करते हुए पंक्ति में खड़े रहना पड़ा।

इस जगह से गुफा के भीतर प्रवेश करते हुए हमें हल्का सा भय भी लगा। अन्दर भी कुछ सीढ़ियाँ उतरनी पड़ी। मैंने भीतर पहुँचकर देखा कि गुफा की छत काफी नीची तो नहीं थी, किन्तु पर्याप्त सुविधाजनक भी नहीं कही जा सकती। यहाँ जलस्रोत की उपस्थिति के अनुभव के साथ ही फर्श पर पर्याप्त नमी, सीलन व कहीं-कहीं हल्की फिसलन भी अनुभव हो रही थी। यहाँ प्रवेश स्थल के अलावा धूप और ताजी हवा का कोई अतिरिक्त स्रोत भी नहीं दिख रहा था। इसके बाद भी बड़ी संख्या में उमड़ रही भीड़ की साँसों द्वारा छोड़ी जा रही कार्बनडाई ऑक्साइड के कारण गर्मी और उमस अलग से पैदा हो रही थी।

गुप्त गोदावरी

गुफा में पहले ही स्वाभाविक रूप में ऑक्सीजन की कुछ कमी थी, जिससे शीघ्र ही हल्की सी घुटन और बेचैनी का भी अनुभव होने लगा। हालाँकि प्रशासन द्वारा इसकी चेतावनी टिकट खिड़की पर ही लिख दी गयी थी। इसी के चलते पूरी गुफा में बिजली के तार फैलाकर रोशनी और चलते हुए बड़े कूलर पंखे से राहत देने का प्रयास भी किया गया था। फिर भी वृद्धों, छोटे बच्चों और उनको साथ लिये औरतों को यह परेशानी साफ महसूस हो रही थी। लेकिन श्रद्धा का ज्वार इन सब परिस्थितियों पर भारी था। जय श्रीराम और जय हनुमान के जयकारों से यह छोटी सी जगह लगातार गूँज रही थी, जो मन की आस्था के साथ गुफा में अतिरिक्त ऊर्जा भी प्रवाहित करने में बड़ी भूमिका निभा रही थी।

यहाँ एक ऊँचे स्थान पर प्रभु श्रीराम के दरबार के रूप में कई मूर्तियाँ स्थापित थीं, जहाँ पूजा अर्चना की जा रही थी। इस गुफा के उमस भरे वातावरण में घूमते हुए मैं बार-बार चेहरे पर चुहचुहा आये पसीने को रूमाल से सुखाने का असफल प्रयास कर रहा था। इसीलिये मैं यहाँ के सभी देखने योग्य स्थान जल्दी-जल्दी घूमकर, इससे सटी दूसरे रास्ते वाली, पतली नहर जैसी दूसरी गुफा की जलधारा में पहुँच गया। यह ऊपरी गुफा के नीचे तथा अपेक्षाकृत कुछ लम्बाई में थी। मैं यहाँ कुछ देर तक घुटने भर गहरे ठण्डे पानी की करीब दस-पंद्रह मीटर लम्बी धारा में चहल-कदमी करने लगा, तब जाकर उमस और थकान से राहत मिली और वातावरण का आनन्द उठाया।

बताता चलूँ कि यहाँ भी कई स्थानों पर भगवान राम और हनुमान की मूर्तियाँ स्थापित थीं, उनके पुजारी भी बैठे थे। इन सबके दर्शन–मनन करके हम भीड़ के दबाव से बचते हुए, उसी गुफा द्वार से वापस निकलकर नीचे उतरने लगे। निकास की सीढ़ियों पर बाहर की ओर एक काले पत्थर का प्राचीन पंचमुखी शिवलिंग स्थापित था, जिसके दर्शन करके हमें विशेष आस्था का बोध हुआ, जिसे श्रद्धापूर्वक प्रणाम करके बड़े शांत मन से हम बाहर आ गये। सामने विशाल पीपल के पेड़ के नीचे वह अद्भुत कुण्ड भी था, जिसमें कल–कल करती गुप्त गोदावरी की धारा समाहित होते हुए अदृश्य होती जा रही थी।

इस गुफास्थल के आस–पास एक छोटा सा विकसित पार्क और हरियाली से भरा पहाड़ है, जिससे आने वाली ठंडी और सुगंधित हवा बार–बार कह रही थी कि अभी–अभी तो आये हो। यहाँ थोड़ी देर और ठहर कर विश्राम तो कर लो। सो, हमने एक अशोकवृक्ष के नीचे पक्के चबूतरे पर बैठकर इस वातावरण का देर तक आनन्द उठाया।

इस दौरान हमने स्थानीय वनवासियों का नाचते गाते हुए एक संगीत भरा लोकनृत्य कार्यक्रम भी देखा। विशेष परिधान में सजे, मोर पंख के गुच्छे लिये, गोल घेरे में खड़े–खड़े घूमकर, ढोलक व अन्य वाद्य यंत्र बजाते पुरुषों व उनके बीच नाचती नर्तकी की विशेष लोक शैली का पारम्परिक आयोजन या अनुष्ठान हमारे लिये कौतूहल पैदा करने वाला और सुखद भी था। कुल मिलाकर हमारी यह यात्रा बहुत रोमांचक और सफल रही। इसके बाद हम यात्रा के अगले पड़ाव की ओर चल दिये।

– रायबरेली (उ. प्र.)

बाल साहित्य समाचार

बाल साहित्य के नवरत्न

लखनऊ। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ के तत्वावधान में आयोजित बाल साहित्यकार सम्मान समारोह में दिनांक २८/०३/२०२१ को बाल साहित्य को समर्पित नौ बाल साहित्यकार सम्मानित किए गए।

१) श्रीमती किरण सिंह, (बलिया) सुभद्रा कुमारी चौहान महिला बाल साहित्य सम्मान। २) श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', (लखनऊ) सोहनलाल द्विवेदी बाल कविता सम्मान। ३) डॉ. दयाराम मौर्य 'रत्न', (प्रतापगढ़) अमृतलाल नागर बाल कथा सम्मान। ४) श्री सुशील दोषी, (लखनऊ) शिक्षार्थी बाल चित्रकला सम्मान। ५) श्री अरविन्द साहू, (रायबरेली) लल्ली प्रसाद पाण्डेय बाल साहित्य पत्रकारिता सम्मान। ६) श्री गुडविन मसीह, (बरेली) डॉ. रामकुमार वर्मा बाल नाटक सम्मान। ७) आचार्य नीरज शास्त्री, (मथुरा) कृष्ण विनायक फड़के बाल साहित्य समीक्षा सम्मान। ८) श्री अजय गुप्त, (शाहजहाँपुर) जगपति गुप्त बाल विज्ञान लेखन सम्मान। ९) श्री सतीश अल्लीपुरी, (संभल) उमाकांत मालवीय युवा बाल साहित्य सम्मान।

श्री अरविन्द साहू को सम्मानित करते अतिथि

उपरोक्त नौ साहित्यकारों को विधानसभा अध्यक्ष श्री हृदय नारायण दीक्षित तथा संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सदानंद प्रसाद गुप्त ने अंगवस्त्र, सम्मान–पत्र तथा ५१,००० की राशि प्रदान की। श्री दीक्षित ने इन्हें उत्तर प्रदेश बाल साहित्य के नवरत्न की संज्ञा दी।

छोटी कहानी

अच्छाई का उजाला

– शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी

फिरोजाबाद रेलवे स्टेशन पर शंकर मूंगफली, भूंजे चना, बेचकर अपना गुजर बसर करता था।

दिन में शंकर पढ़ाई करता और शाम को रेलवे स्टेशन आकर रेल बोगी में सवार हो अगले स्टेशन तक मूंगफली चना बेचा करता था।

एक दिन शंकर के साथ एक घटना घटी। दिन में जिस रेल की बोगी में वह मूंगफली बेच रहा था। उसी बोगी की एक सीट पर एक वृद्ध व्यक्ति अपना बैग भूल गया। शंकर उस बेग को लेकर असमंजस में था। उसके कुछ साथी ऐसी वस्तुएँ मिलने पर अपने पास रख लेते थे।

शंकर के पास बैग देख सुलभ को आश्चर्य हुआ। उसके समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि माजरा क्या है? उससे रहा ना गया आखिर पूछ ही लिया– ''जब तुम्हें यह बैग लावारिस हालत में सीट पर मिला था तो तुमने वह बैग अपने पास क्यों रख लिया?'' उसने शंकर को समझाया।

''भाई! बेईमानी से प्राप्त की हुई कोई भी वस्तु उसके जीवन को नीचे गिरा देती है।''

अब शंकर के पैर थाने की ओर वह बैग जमा करने तुरन्त ही उठ चले। थाने पर वे वृद्ध जिनका बैग था पहले से ही परेशान से खड़े थे। बैग की पहचान बताकर उन्होंने बैग प्राप्त किया।

शंकर ने बैग लौटाकर वृद्ध से क्षमा मांगी।

शंकर की जब पूरी बातें वृद्ध ने सुनी तो वह बोला– ''बेटे तुम बहुत भाग्यशाली हो कि तुम्हें बुरे लोगों के बाद सुलभ जैसा एक अच्छा मित्र मिल गया। बुरे लोगों ने काले बादलों की तरह आकर तुम्हारे जीवन में बुराई का अंधकार भर दिया था लेकिन सुलभ जैसे अच्छे मित्र ने सूरज की भाँति आकर अच्छाई का प्रकाश फैला दिया।''

वृद्ध की बात सुनकर शंकर घर लौटा। रात तो सोते समय शंकर के कानों में में उस वृद्ध की बात गूँजने लगी और उसने तय किया कि अब वह कभी अपने जीवन में ऐसे लोगों का साथ नहीं करेगा जो उसे बुराई के रास्ते पर ले जाएँ। वह अच्छी तरह समझ चुका था कि बुरे लोगों का साथ काले बादलों की तरह जीवन को अंधकार से भर देता है और अच्छे लोगों का साथ जीवन में सूरज की तरह उजाला ले आता है।

– फिरोजाबाद (उ. प्र.)

पृथ्वी की आत्मकथा

– रामगोपाल राही

सारे ग्रह सूर्य के चक्कर लगाते हैं। एक दिन व्यथित परेशान पृथ्वी, धरती ने चक्कर लगाते–लगाते उगते हुए सूर्य से कहा– ''हे सूर्य देव मेरी रक्षा करो। आज के मानव ने मुझे खोद–खोदकर खोखली कर दिया है। मेरे अकूत खजाने में से कोयला, तेल, लोहा और भी कई धातुएँ निकाल मुझे रीता कर दिया। यहाँ तक धमाकों से मेरी छाती चीर–चीर पत्थर तक निकाल लिए।

धरती फिर अपना दर्द बताने लगी, बोली मेरे अंदर कई खनिजों का अकाल हो गया। मैं खोखली हो गयी। आज के स्वार्थी लोगों ने रसायन खाद से मुझे बंजर बना दिया। मेरी अन्न उगाने की क्षमता बर्बाद कर दी। पॉलिथीन से मेरी धमनियाँ रुक गई। जल दोहन में पाताल तक पहुँच गए लोग।''

धरती फिर आगे बोली ''हे ग्रहराज सूर्यदेव! इतना ही नहीं वन नदियाँ पर्वत सागर यह सब मेरे अंग हैं इनको भी इस सदी के मानव ने नहीं छोड़ा। इनको प्रदूषित कर इनमें कचरा भर दिया। हे भगवान ई कचरे के मारे मेरे नाक में दम है। बात यहाँ तक ही नहीं, पेड़–पौधे वनस्पति जो मेरे आभूषण हैं इनको काट कर मुझे बर्बाद कर दिया, मैं उजड़ गई।

पेड़–पौधे जंगल काट कारखाने व बस्तियाँ बना ली। जंगल व जीव जिनसे मेरा संतुलन है, इनके अभाव में डगमगाने लगा है। मेरे पर पेड़ों का संयोजन प्राणी मात्र को प्राणवायु देते रहने के लिए किया था। 'विनाश काले विपरीत बुद्धिः' आज के मानव ने पेड़–पौधों वन–वनस्पति हवा देने वाले श्वास–श्वास के दादा फेफड़ों को ऑक्सीजन देने वाले पेड़ों व जंगलों को ही काट दिया। प्राण वायु ऑक्सीजन से प्राणी मात्र की सासें चलती है। वन कम हो गए जंगल व जीव दोनों ही साफ हो गए। हे सूर्यदेव! मैं क्या करूँ?

धरती की बात सुनकर सूर्यदेव ने कहा– पृथ्वी! धीरज रखो, आज का मानव स्वयं अपने ही जाल में फंस रहा है, भौतिकवादी हो गया है। स्वार्थ व सुविधाएँ के चलते आज के मानव ने प्रकृति को छेड़ा! हे पृथ्वी! तुम्हारा भी काफी दोहन हुआ और हो रहा है। आज के मानव को प्रकृति को छेड़ने का कुफल अवश्य मिलेगा।

एक दिन भौतिकवाद का अंत होकर रहेगा। आज की वैभवशाली भौतिकवादी संस्कृति जिसके लिये मानव

ने प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर तुम्हें खोखला बनाया इसका परिणाम व्यक्ति को भोगना पड़ेगा।''

जाते–जाते सूर्य ने फिर कहा ''प्रदूषण फैलाने से प्रकृति को छेड़ने से कई तरह की बीमारियों ने मानव को घेर लिया है। आज का मानव अपने ही जाल में फँसता जा रहा है और अंत की ओर बढ़ रहा है। यह कह सूर्यदेव आगे बढ़ गए।

इधर पृथ्वी ने सूर्य से प्रार्थना कर अपना सिर ऊँचा किया ही था, सामने देखा छोटे–छोटे बालक गड्ढे खोद–खोदकर पौधे लगा रहे थे। यह देख पृथ्वी को बहुत अच्छा लगा उसका सारा क्लेश व क्षोभ दूर हो गया। कल के युवा आज के बच्चों में पौधे और पेड़ लगाने के संस्कार विकसित हो रहे हैं, पृथ्वी सोचने लगी इससे निश्चित रूप से मेरा भविष्य सुखद होगा।

इधर बच्चे बड़े उत्साह से अपनी धुन में पौधे लगा रहे थे कुछ बड़े हुए पौधों को पानी पिला रहे थे कोई और दूसरे नए पौधे लगाने के लिए गड्ढे खोद रहे थे पृथ्वी बच्चों को बराबर टकटकी लगा देख देख प्रसन्न हो रही थी, मुस्कुरा रही थी।

माता तो माता होती है। अपनी माता हो, या धरती माता। बच्चों को कुछ करता देख माता खुश होती ही होती है। सबकी माता धरती माता बच्चों को पेड़–पौधे लगाते देख बड़ी पुलकित हुई, उससे नहीं रहा गया आखिर माँ जो ठहरी। बच्चे पेड़ लगाने में तन्मय थे कि अचानक पास के पेड़ों में से एक आवाज आई। कहा ''मेरे बच्चो! मैं तुमसे बहुत खुश हूँ।'' बच्चे आवाज सुन इधर–उधर देखने लगे। सब भौचक्के हो गए कोई नजर नहीं आया। फिर आपस में ही बोले ''यह किसकी आवाज आयी?''

इस बात का उत्तर किसी के पास नहीं था सब एक–दूसरे को देखते रहे इतने में फिर आवाज आई ''बच्चो! मैं पृथ्वी हूँ धरती हूँ।'' बच्चे सुन आश्चर्य में पड़ गए अदृश्य आवाज सुन बच्चे बोले– ''क्या पृथ्वी? पृथ्वी ने कहा ''हाँ पृथ्वी, धरती, जमीन, भूमि मैं धरा हूँ।'' सुन बच्चे बोले ''पृथ्वी पर तो हम खड़े हैं, और धरती पर तो सागर हैं पहाड़ भी है, नदियाँ हैं, वन हैं, पृथ्वी पर तो सारी दुनिया है। तुम कैसी पृथ्वी हो धरती हो?''

बच्चों की आवाज सुन धरती बोली ''तुम ठीक कहते हो।'' पृथ्वी आगे बोलती पर बच्चे बोल पड़े ''हमारे अध्यापक ने बताया है धरती–पृथ्वी नारंगी की तरह गोल–गोल होती है। तुम दिखती भी नहीं कैसी हो कुछ नजर भी नहीं आ रही।''

बच्चों की बालसुलभ बात सुन पृथ्वी हँसने लगी। मुस्कुराती रही, फिर धरती बोली ''बच्चो, तुम ठीक कह रहे हो, बच्चे ही तो ठहरे। बच्चे फिर बोले धरती तो बहुत बड़ी है, बहुत भारी है। आप आप दिखती भी नहीं माँ की जैसी आवाज तो आ रही है।'' बच्चे की बात सुनकर पृथ्वी मुस्कुराती रही। बच्चे फिर बोले ''धरती हैं तो बताओ'' बाल सुलभ प्रश्न करते हुए बच्चे बोले ''आप और आप पर सागर पहाड़ नदियाँ मैदान जंगल यह सब कैसे? माँ जैसी तुम्हारी आवाज है आप कह रही हो मैं धरती हूँ।'' इसी के चलते बच्चे पूछ बैठे ''आप धरती हैं तो बताओ आप धरती, पृथ्वी कैसे बनी?''

सब कुछ सुन रही धरती माता को बच्चों के मुँह से यह सब सुन बहुत अच्छा लगा, हँसते हुए धरती माता ने संवाद को आगे बढ़ाने के लिए बच्चों की जिज्ञासा देख (धरती गोल गोल घूमती हुई गोले में से ही माता, नारी रूप में प्रकट हुई।) बच्चों ने देखा धरती गोल है घूम रही है पास में पृथ्वी को इस तरह खड़ी देख बच्चे अवाक् ठगे से रह गए। बच्चे जिज्ञासा के साथ बोले ''धरती माँ! आप कैसे बनीं बच्चों की बात सुन धरती मुस्कुराई और बोली हाँ बच्चों मैं तुम्हें अपने बनने की कहानी सुनाती हूँ।'' कहानी सुनने के लिए बच्चे पास ही टीले पर पेड़ों की छाया में उत्सुकता से धरती की कहानी सुनने के लिए

धरती बोली– ''मैं पृथ्वी –धरती हूँ। बच्चों मेरी कहानी बहुत लंबी है। धरती बोलने लगी कहा मैं पूरे ब्रह्माण्ड में एकमात्र ज्ञात ग्रह हूँ, अनमोल हूँ, जहाँ जीवन के लिए पानी व ऑक्सीजन दोनों हैं, जानते हो! और भी ग्रह हैं, बच्चे बोले ''हाँ, और भी ग्रह हैं। फिर धरती के कहा किसी भी ग्रह पर पानी ऑक्सीजन दोनों ही नहीं है। साथ में एक बात और गुरुत्वाकर्षण का संयोजन भी मेरे में ही है अर्थात् धरती पर ही है।'' पृथ्वी की बात सुन बच्चे बोले ''यह तो है धरती माँ पर आप कैसे बनी यह बताओ?''

बच्चों की बात सुन हाथ हिला धरती माँ बोली– बताती हूँ, बताती हूँ। सुनो धरती बोली आज से ५ अरब (बिलियन) वर्ष पहले अंतरिक्ष में एक भयानक विस्फोट हुआ। सुन बच्चों में से एक बोला– ''धरती माँ! यह अंतरिक्ष क्या है?'' यह सुन धरती मुस्कुराते हुए बोली– ''अंतरिक्ष नहीं जानते?'' धरती माँ बोली ''देखो ऊपर आकाश दिखाई देता है अंगुली से बताते हुए। फिर कहा आप किस पर बैठे हैं?'' बच्चों ने कहा ''पृथ्वी पर धरती पर।'' अब धरती ने कहा– ''धरती आकाश के बीच जो है वही अंतरिक्ष है। अंतरिक्ष का कोई छोर नहीं है।''

यह कह धरती फिर कहने लगी– ''अंतरिक्ष में हुए विस्फोट से एक बहुत बड़ा आग का गोला निकला जो सौरमंडल में सूर्य बन गया। विस्फोट भयानक था जिसके कारण चारों ओर धूल–धूल के कण पत्थर अंतरिक्ष धूल के कण चट्टानें कंकर पत्थर चारों ओर फैल गए। धरती फिर बोली गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण धूल के कण चट्टानें पत्थर आपस में जुड़ने लगे उससे सौरमंडल बना।'' धरती आगे कुछ कहती तभी बच्चे बोले– ''यह गुरुत्वाकर्षण क्या है?''

इस पर धरती माँ ने बच्चों को समझाकर कहा– ''कोई भी वस्तु गेंद ही समझ लो ऊपर आकाश की ओर उछालो वह वापस ऊपर से नीचे लौटकर धरती पर आ जाती है यह मेरी चमत्कारी गुरुत्वाकर्षण शक्ति है। यह शक्ति चट्टानों को जोड़ती रही चट्टानों के आपस में टकराने से धरती आग के गोले की तरह तपने लगी। मैं धरती गर्म होते हुए भी अपना आकार ले चुकी थी। धरती फिर बोली ४,५४ अरब (बिलियन) वर्ष पहले मेरा तापमान बारह सौ डिग्री सेल्सियस था।'' तापमान की बात सुन बच्चे बोले ''इतनी गर्मी धरमी माँ आप में?''

धरती माँ बोली ''हाँ बच्चो! यह उस समय की बात है।'' बच्चे बोले ''बाप रे बाप! इतनी गर्मी?'' धरती फिर बोली फिर पहाड़ ज्वालामुखी भी बनने लगे थे। जब तक मेरा निर्माण हुआ प्रकृति की विचित्रता के चलते, बादलों के बरसने से मेरे तीन चौथाई भाग में पानी भी आ गया सागर बन गए। धरती फिर बोली मैं ठंडी हुई फिर मुझ पर जीवों की उत्पत्ति के साथ मुझ पर मनुष्य की संतति बढ़ती चली आ रही है।

धरती ने फिर कहा ''मनुष्यों से पूर्व से मेरे ऊपर (धरती पर) पेड़–पौधे आये यह हवा साथ में लाए आगे कहा सारा संसार मुझ पर बसा है मैं किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं करती। मैं सभी को सभी खनिज देती आयी हूँ। पत्थर, पेट्रोल, कोयला, लोहा और भी खनिज सब देती हूँ।

आदमी के लोभ की कोई सीमा नहीं मेरा सब दोहन कर लिया। मैं खोखली होती जा रही हूँ। विस्फोटों से मेरा तन बदन छलनी होता जा रहा है। पॉलिथीन ने मेरा आंतरिक स्वरूप बिगाड़ दिया है, केमिकल रसायनों ने मुझे बंजर बना दिया। धरती माँ फिर बोली बच्चों तुम्हारा पेड़ लगाना मुझे अच्छा लगा।'' इतना कह धरती माता अंतर्ध्यान हो गई। बच्चे पुकारते रहे ''धरती माँ! धरती माँ! धरती माँ! पृथ्वी माँ!''

पर अब धरती माँ मनुष्य रूप में नजर नहीं आयी। बच्चे बोले ''धरती माँ! हम पेड़ लगाएँगे धरती को बचाएँगे।''

– लाखेरी (राजस्थान)

प्यार की ठण्डी धूप बनी रहे

– श्रीधर बर्वे

''दीवारें उठाना तो अर युग की सियासत है,
ये दुनिया जहाँ तक है, इन्साँ की विरासत है।''

–निदा फाजली

''वसुधैव कुटुम्बकम्'' मनुष्य ही नहीं समस्त प्राणी और वनस्पति जगत को सम्पूर्ण एक इकाई मानना हमारे दर्शन का उपागम्य रहा है। संकुचित, विशेषकर राजनीतिक सोच और स्वार्थों ने हमारी पृथ्वी को अनेक नामों द्वारा खण्ड–खण्ड कर दिया है। प्रकृति द्वारा निर्मित खण्ड जहाँ सौन्दर्य उत्पन्न करते हैं, वहीं मनुष्य द्वारा रचे गए खण्ड न केवल मनुष्यों को बाँटते हैं, वे पृथ्वी की मनोरमता नष्ट कर सर्वत्र विकृति पैदा करते हैं।

विखण्डन विभाजन की मानसिकता से मुक्त होने के लिए विश्व कवि रवीन्द्र की प्रार्थना है कि– ''हे! मेरे परमपिता हमें निरन्तर कर्मरत रखते हुए, पूर्णता की ओर अग्रसर होते हुए, विशालता की ओर ले जाते हुए– मेरे देश को जाग्रत करो, संकुचितता से मुक्त करो।''

यह ''मेरा देश'' हर उस पाठक का है जो पृथ्वी के किसी भी कोने में स्थित देश में पढ़ रहा है। नक्शों पर स्याही से खिंची गयी रेखाएँ रेडक्लिक हो अथवा ड्यूरेण्ड या मेकमैहोन, अवसर निर्मित कर इन्हें रक्त से सींचने के उपक्रम राजनीति करती रहती है।

ऐसी रेखाओं का जन्म पहले मनुष्य के मन में होता है– फिर नक्शों पर खींची जाती हैं और उन्हें बनाये रखने के लिए। शायर साहिर लुधियानवी ने सटीक कहा है कि– ''ये मशगला है सियासत का, कि बच्चे जवाँ हों और कट जायें।'' साहिर के ही शब्दों को पुन: उद्धृत करूँ– इस धरती का रूप न उजड़े। प्यार की ठण्डी धूप न उखड़े।'' क्या कभी ऐसा युग होगा, अथवा लाया जा सकेगा? यह विचार इसलिए नहीं कि युद्धों में मनुष्य ही मरते हैं, परिवार जीवित रहते हुए मरते हैं, समाज में मानसिक विकलांगता आती है, इन्सानियत मरती है और जीव–जन्तु, वनस्पति मरते हैं तथा पृथ्वी की प्राकृतिक संरचना का विनाश करते हैं। जीवन को कुरूप बनाते हैं।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद 'लीग ऑफ नेशन्स' की रचना और द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति उपरान्त संयुक्त राष्ट्रसंघ का गठन अथवा इस समय प्रचलित मुहावरा वैश्वीकरण (ग्लोबलाइजेशन) सभी का संदेश है कि 'विश्व के मनुष्यों एक हो' जिससे कि मनुष्यों के साथ समस्त प्राणी, वनस्पति जगत भी सुख–शांति से जी सकें।

मनुष्यों की एकता को तोड़ने के लिए राजनीति सम्प्रदायों से लेकर जाति, नस्ल और मजहबी मतों के दलदल उपस्थित हैं। पुराना साम्राज्यवाद नये अवतार में प्रकट हो विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में उपभोक्तावाद बढ़ाकर और असुरक्षा का भाव उत्पन्न कर १९वीं शताब्दी की परिस्थितियाँ पैदा कर रहा है– ऐसे ही कारणों से अनेक

जगहों पर सीमाएँ जल उठती हैं– रवाण्डा, बुरूण्डी हो या कांगो या सूडान– शस्त्रास्त्रों और उपभोक्ता सामग्रियों को बाजार चाहिए।

इनसे उबरकर कभी भावी पीढ़ियाँ गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रार्थना दोहराएंगी– अन्तर्मन विकसित करो, निर्मल करो', कवि वर्ड्सवर्थ के आह्वान पर ध्यान देंगी– Back to Nature चलें पुन: प्रकृति की ओर, या फिर डेविस की बात सुनकर इस लाचार जिन्दगी से निजात पाकर कभी किसी गिलहरी को वन में दाना खाते–कुतरते देखने का आनन्द ले सकेंगी।

खगोल विज्ञानी ब्रह्माण्ड में कई और पृथ्वियों की खोज में लगे हो परन्तु ठोस सच्चाई यही है कि वर्तमान में हमारे पास एक ही हमारा घर है, वह है, हमारी पृथ्वी।

इसका रक्षण तथा संरक्षण निर्विकल्प है। आतंकवाद, जनसंख्याधिक्यता, प्रदूषण, मतांधता

और अनुदार–संकुचित सोच से मुक्ति ही ब्रह्माण्ड में हमारे एक मात्र गृह–ग्रह को नया जीवन प्रदान कर सकती है।

– इन्दौर (म. प्र.)

आओ, आओ खेलें खेल

चाँद मो. घोसी,
मेड़ता सिटी (राज.)

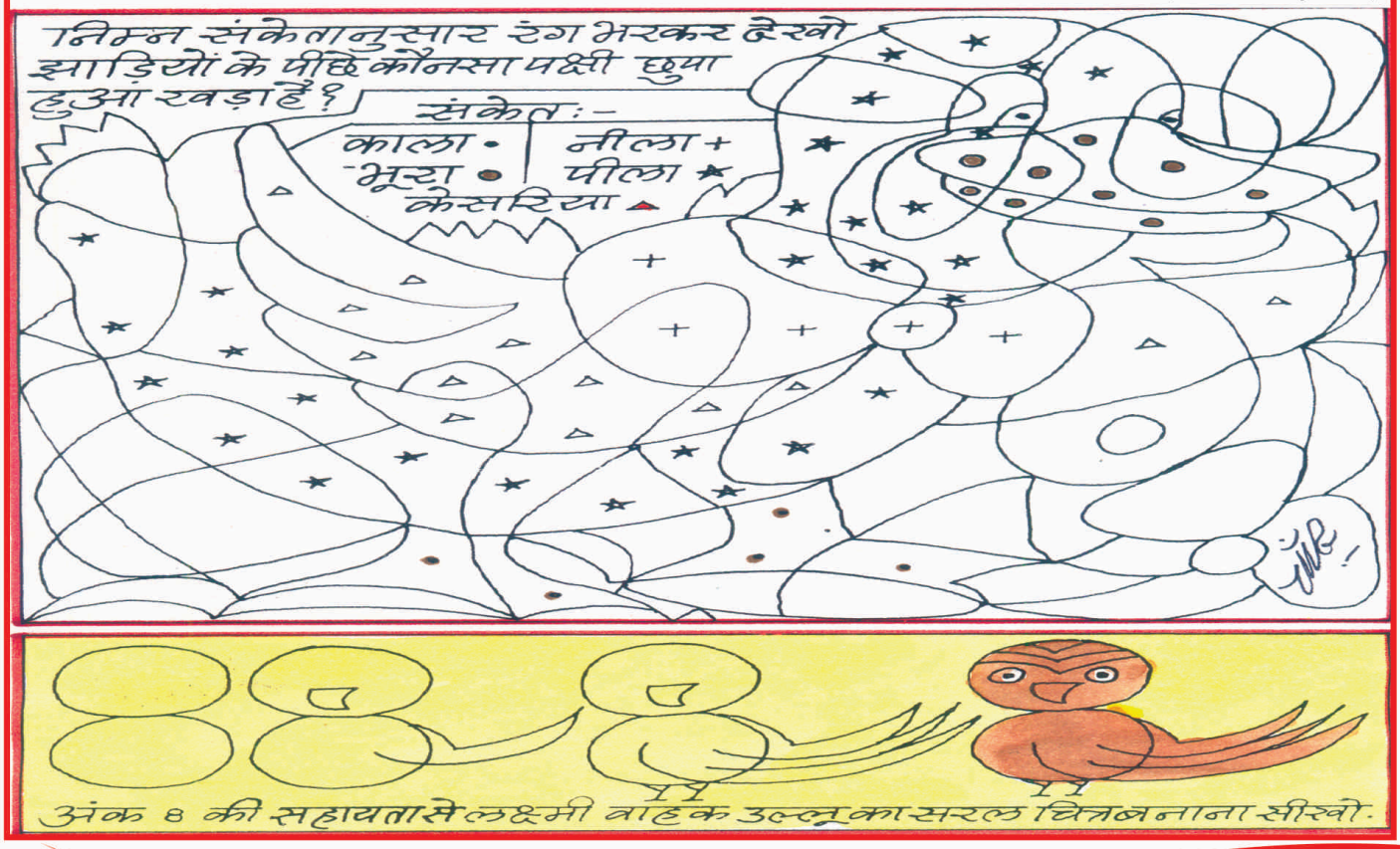

सचित्र जानकारी-संकेत गोस्वामी

स्वाद का जादूगर नमक

नमक भोजन को स्वादिष्ट बनाने में जादू के समान काम करता है। नमक के बिना भोजन किसी को पसन्द नहीं आता। यह सभी स्वादों में वृद्धि कर देता है। इसके अतिरिक्त, नमक में परिरक्षक गुण हैं। सच तो यह है कि खारापन और मिठास, दो स्पष्ट रूप से मुख्य स्वाद हैं। इसलिए लोगों में इनका खाने के लिए स्वाभाविक ललक रहती है।

सबसे पहले चीनियों ने बड़े कड़ाहों में समुद्र के पानी को वाष्प बना कर नमक बनाना शुरू किया था। समुद्री नमक सेंधा या काले नमक से भिन्न होता है।

मानव शरीर में लगभग 4 औंस नमक होता है।

शरीर में पर्याप्त मात्रा में नमक न रहे तो जानते हो क्या होगा?

मांसपेशियों में संकुचन नहीं होगा, रक्त प्रवाहित नहीं होगा, भोजन नहीं पचेगा और हृदय में धड़कन नहीं होगी।

वैज्ञानिक हमें अब तक यह नहीं बता सके हैं कि कितना नमक पर्याप्त होना चाहिए। और कितना खाने से बहुत अधिक माना जायेगा।

यद्यपि नमक खाना हम सब के लिए महत्वपूर्ण है, फिर भी हमें सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि ज्यादा नमक खा लेना भी हानिकारक होता है।

डॉक्टर की सलाह

– साधना श्रीवास्तव

पात्र

डॉक्टर, तीन रोगी

मंच सज्जा (डॉक्टर का कमरा है रोगी बैठे हुए हैं।)

(रोगी का प्रवेश)

रोगी– डॉक्टर साहब! डॉक्टर साहब! जल्दी से कर दो मेरा इलाज,बहुत दर्द हो रहा मुझको आज।

डॉक्टर– आपका क्या नाम है?

रोगी– मेरा नाम राम है।

डॉक्टर– क्यों भाई राम! क्या हो गया?

रोगी– पेट में दर्द है बेहाल हो गया।

डॉक्टर– पेट में अब दर्द है तो क्या खाया था?

रोगी– चाट, पकौड़ी, भेल और फल खाया था।

डॉक्टर– क्यों भाई! तुमने हाथ धोए थे?

रोगी– अरे! नहीं मैं तो भूल गया था।

डॉक्टर– क्यों भाई! तुमने फल धोए थे?

रोगी– अरे! नहीं मैं तो भूल गया था।

डॉक्टर– क्यों भाई! चाट ढँकी रखी थी?

रोगी– नहीं नहीं, वह तो खुली रखी थी।

डॉक्टर– लगता है इसलिए हो रहा पेट दर्द।
सफाई का नहीं रखा ध्यान लगा मर्ज।।
अब सदा याद रखना तुम सफाई।
अभी लिख देता हूँ मैं तुमको दवाई।।

रोगी– डॉक्टर साहब! बहुत–बहुत धन्यवाद।
आपकी बात मैं सदा रखूँगा याद।।
खाना खाऊँगा मैं हाथ धोने के बाद।

डॉक्टर– कल तुम आना, अपना हाल बताना।

(दूसरे रोगी का प्रवेश)

डॉक्टर– आपको क्या हो रहा श्रीमान?

रोगी– डॉक्टर साहब! मेरी तबियत हो रही खराब।
मुझको लग रहा है डर, भारी हो रहा मेरा सर।।
फैल रही महामारी, परेशान हैं दुनिया सारी।

डॉक्टर– क्या हो रहा आपको? सर्दी जुकाम और बुखार?
क्या आप सेनीटाइजर से हाथ नहीं धोते बार–बार?

रोगी– डॉक्टर साहब! मैं भी रखता हूँ ध्यान।
मुझे कोरोना के बारे में है ज्ञान।
मैं मास्क का सदा करता हूँ उपयोग।
पर डरता हूँ कहीं मुझे, लग न जाए यह जान लेवा रोग।

डॉक्टर– श्रीमान! डरने से नहीं चलता है कोई काम।
आप योग, ध्यान, कसरत करें सुबह–शाम।
आप अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएँ।
स्वच्छ, ताजा, गर्म भोजन, विटामिन सी खाएँ।
बिना काम के घर से बाहर, भीड़ में न जाएँ।
आपस में दो गज की दूरी आप अवश्य बनाएँ।।
समझ जाए दुनिया सारी नहीं फैलेगी यह बीमारी।

रोगी– डॉक्टर साहब आपसे बहुत सारी बातें ली जान।
जिनसे था मैं अनजान। मैं दूसरों को भी दूँगा ज्ञान।

डॉक्टर– मुझे एक बात और आपको है बताना।
लौंग काली मिर्च तुलसी इलाइची दालचीनी सौंठ का काढ़ा बनाना।
गर्म गर्म काढ़ा आप अवश्य पीना।
एक बात अवश्य ध्यान रखना आप।
दिन में दो बार अवश्य लेना भाप।

रोगी– डॉक्टर साहब अब मेरा डर हो गया दूर।

आपने जो बताया उसे करूँगा मैं जरूर।
भीड़भाड़ से रखूँगा अपने आपको दूर।

डॉक्टर– चलिए मैं आपका पूरा चैकअप कर लेता हूँ।
आपके मन के डर को दूर भगा देता हूँ।
आपके ऊपर नहीं है कोरोना का साया।
बस आपके मन में केवल भय है समाया।

रोगी– आपने जो बात कही वह सोलह आने सही
मेरा ऑक्सीजन लेवल भी है बिल्कुल सही
पूरी तरह से आश्वस्त हूँ मुझे कोरोना नहीं।

(तीसरे रोगी का प्रवेश)

डॉक्टर– (रोगी से) आइए बैठिए कहिए आप!

रोगी– साहब कल रात से तबियत है खराब।
किसका लगा मुझ पर अभिशाप
बढ़ रहा है मेरे बदन का ताप।

डॉक्टर– क्या ठंड देकर आया था बुखार?
कँपकँपी लग रही थी बार बार।

रोगी– सही कहा आपने डॉक्टर।
ठंड से काँप रहा था थर थर।
क्या मुझे हो गया है कोरोना।
पड़ेगा मुझे आइसोलेटेड होना।

डॉक्टर– अरे भाई हर बुखार नहीं होता कोरोना।
मच्छर भगाने का करना पड़ेगा तुमको इलाज।
मलेरिया का टेस्ट तुमको
करवाना पड़ेगा आज।
आसपास के गड्ढों को पड़ेगा
तुमको भरवाना।
आसपास भरा हो पानी तो
मिट्टी का तेल डलवाना।
पड़ेगा तुमको डी.डी.टी. का
छिड़काव कराना।
कूलर की टंकी को भी तुम करवा लेना साफ।
गंदे इक्कट्ठे पानी में मच्छर हैं पनपते।
नीम का धुआँ करने से ये हैं भगते।

रोगी– डॉक्टर साहब मुझको हुआ है क्या?
घबरा रहा है मेरा जिया।

डॉक्टर– लगता है आपको हुआ है मलेरिया।
मैंने इसका कारण आपको बता दिया।
आपको रखना पड़ेगा बहुत सावधानी
रोज लगाकर सोना आप मच्छर दानी।
अच्छा भाई अभी मैं लिख देता हूँ दवाई।
याद से करवा लेना घर के आसपास सफाई।
कल आप रिपोर्ट लेकर आना।
अपने हालचाल हमें बताना।
जाते–जाते सेनीटाइजर से
हाथ अवश्य धोते जाना।
मैंने जो समझाया उसको
दूसरों को भी बताना।
अच्छा अब मैं चलता हूँ मुझे
दूसरे अस्पताल है जाना।
वहाँ के मरीजों को भी मुझे
बहुत कुछ है समझाना।

(पर्दा गिरता है)

– भोपाल (म. प्र.)

वो फूली वह भी फूली

– पद्मा चौगांवकर

'कोरोना' का कहर! अचानक आया ये अदृश्य संकट! मिनी की कोचिंग संस्था भी बंद होने की सूचना थी और होस्टल खाली होने लगे। घर लौटने के लिये पिताजी ने टिकिट बुक करा दिया और मिनी घर आ पहुँची.....

..... अब 'लॉक डाऊन' हो गया, घर मैं सब कुछ बदल गया था।

माँ का विद्यालय और पिताजी का कार्यालय बंद, पिताजी घर से ही काम कर रहे थे। जय घर में ही था। बुआ का बेटा, अभय, परीक्षा समाप्त करके मामा के घर आया पर अब लॉक डाऊन के कारण यहीं था.... और थी दादी! दिनभर घर भरा–भरा।

कामवाली बाइयों की अनुपस्थिति में सारे काम सबको मिलजुलकर करने थे। सहज ही कामों का बँटवारा हो गया।

''माँ! तुम सबको गरमागरम रोटी खिलाती हो, आज मैं सब्जी बनाऊँगी और रोटी भी।'' मिनी ने कहा।

''अरे वाह! बुरे दिनों का अच्छा उपयोग!'' पिताजी बोले।

''हे भगवान! तो आज मिनी दी के हाथ की रोटी! विषय चिंताजनक है।'' जय की बात पर सब हँस पड़े।

''देखना, जब बनाऊँगी, देखते रह जाओगे।'' मिनी ने सोचा था, रोटी बनाना बहुत ही सरल काम है, सो कह दिया।

''ठीक है, तुम रोटी का प्रयास कर लेना, आटा लगा रखा है।'' माँ ने कहा तो मिनी बोली– ''आटा मैं लगा लेती ना।''

''वो जरा मुश्किल काम है कल लगाना तुम।''

फिर मिनी गयी दादी के पास, उनको मोबाईल ऑपरेट करना सिखाने। दोनों उसी काम में व्यस्त थीं, कि दादी ने या दिलाया– ''मिनी! आज तुम रोटी बनाने वाली हो ना?''

''अरे हाँ! मैं तो भूल ही गयी थी, अब मोबाईल की क्लास कल।'' कहते हुए वह रसोई की ओर भागी। माँ वहीं थी, मिनी ने हाथ धोये और तवा लेकर गैस पर चढ़ा दिया, गैस ऑन। ''अरे यह क्या? गैस सिम कर, अभी तो रोटी बेलनी है।''

मिनी ने आटे की बड़ी सी लोई बनाई, सूखे आटे में दबाई।

''हाँ माँ! इस लोई को लगाने वाले आटे को क्या बोलते हैं?... मैं भूल रही हूँ।''

'''पलेथन'! पर अब बातें मत कर, लोई पर बेलन चला।''

''हाँ, हाँ, बस!''

मिनी ने लोई चकले पर रखी और जोर से बेलन चलाया... अरे ये क्या? लोई तो चकले से चिपक गयी, हिलने का नाम न ले! फिर समेटी, बहुत सारा पलेथन चकले पर फैलाया, पर लोई बेलन के दबाव से फिर चिपक गयी। उफ्फ! मिनी परेशान थी।

''मिनी, लोई थोड़ी छोटी ले और बेलन धीरे–धीरे चला– किनारे–किनारे। बेलन के साथ लोई, घूमती हुई पसरती जाये। बीच में पतली मत करना!... ओह! अरे, तवा तेज हो गया, देख, गैस बंद कर।'' माँ ने कहा।

''माँ, अब क्या–क्या देखूँ! हे प्रभो! ये काम इतना आसान नहीं जितना मैंने सोचा था... और माँ, आटा भी कुछ गीला है... कल बनाऊँगी, स्वयं आटा लगाकार।'' मिनी बोली।

तभी जय का रसोई में प्रवेश हुआ– ''बनी क्या एकाध? अरे, तवा जल गया, चकला–बेलन सन गये?''

''हाँ–हाँ ठीक है, कल देखना, क्या मस्त चपाती बनाती हूँ।'' कहते हुए मिनी हाथ से चिपका आटा छुटाने

लगी। माँ मुस्कुरा रही थी....

मिनी निरुत्साहित सी दादी के पास जा बैठी। रोटी बनाने की, 'असफल प्रयास' की रिपोर्ट, जय ने पहले ही दादी के पास पहुँचा दी थी! दादी ने मिनी को कुछ 'सूत्र' (युक्तियाँ) दिये, उत्साह बढ़ाकर उसकी निराशा दूर की...

दूसरे दिन मिनी ने सब्जी काटकर रखी और फिर रोटी के लिये आटा तैयार करने परात में निकाला और उसमें पानी डाला.... अरे, ये क्या! पानी अधिक गिर गया शायद... अब क्या? ''माँऽऽऽ'' घबराकर उसने पुकारा। पर माँ से पहले जय–अभय भागे आये।

''क्या हुआ?'' अभय ने पूछा। तो जय बोल पड़ा, ''लॉक डाऊन में आटा गीला।'' अब और आटा डालना पड़ेगा।'' गीले आटे में और सूखा आटा डालने में, उन्होंने मिनी की सहायता की... और कठिनाई से मिनी गीले आटे को लौन्ध में बदल पायी, माँ ने भी मदद की। अब अच्छी तरह मसकर आटा तैयार था।

दादी की युक्तियाँ और माँ की सीखें और देखरेख में मिनी ने लोई तोड़ी और चकले पर रखी। लोई चली, पर बेलन अभी भी बस में नहीं था। रोटी गोलाकार होने से मना कर रही थी, कभी ऑस्ट्रेलिया तो कभी अफ्रीका के नक्षे बन रहे थे.... फिर मिट रहे थे। पर मिनी भी जिद पर थी। आखिर ठीक–ठाक दिखती एक चपाती बिल गयी और चढ़ गयी तवे पर। पर गैस की ज्वाला पर सेकते हुए चिमटे की पकड़ में आना मुश्किल हो रहा था। कहीं से भी निकल पड़ती भाप उसे फूलने नहीं दे रही थी। दो–तीन रोटियाँ जल गयी। और भाप की फुफकार मिनी की अँगुलियों को लाल कर गयी।

माँ बोली– ''अब बस कर, अँगुलियों पर ठंडा पानी डाल जरा। ये प्रमाण–पत्र है रोटी बनाने का। चल, अब कल बनाना, आज काफी अच्छा कर लिया।''

''माँ, बस एक और...।'' मिनी को धुन चढ़ी थी।

इस बार रोटी कुछ ठीक बनी, पर फूली नहीं,

कड़क हो गयी।

''मेरी रोटी क्यों नहीं फूलती?'' मिनी खीज गयी, माथे पर पसीना छलक आया।

माँ बोली– ''मिनी! पहले तवे पर रोटी जल्दी पलट। रंग बदल जाये, पर दाग ना आने पाये। फिर उसी ओर से आग पर रख।'' दादी ने भी तो यह बताया था। पर बेलने की धुन में यह क्रम भूल जाती थी मिनी... और रोटी तवे पर पहले ही खैरी हो जाती.. फिर फूलती कैसे?

तीन–चार जली रोटियाँ! मिनी कहती– ''माँ! ये रोटियाँ मैं ही खाऊँगी, किसी को मत देना।''

पर पिताजी फिर भी कौतुक करते– ''अरे वाह! इतनी तो अच्छी हैं, सभी खायेंगे, अभ्यास जारी रखो।''

और उस दिन, जैसे अभ्यास ही रोटी आग पर रखी, एकाएक गुब्बारे सी फूल गयी। उसका भाप छोड़ता हिस्सा मिनी से आसानी से चिमटे की चपेट में ले लिया। और देखती ही रह गयी फूली रोटी को। जैसे कोई सपना सच हो गया हो अचानक।

और प्रसन्नता से फूलकर बोली मिनी– ''माँ! पिताजी! दादी! फूल गयी वो.. फूल गयी।''

जय और अभय भी फूली को देखने दौड़े। सारे घर में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी रोटी के फूलने पर।

– गंजबासौदा (म. प्र.)

पानी पर माईक्रोस्कोप बनाना

– डॉ. राजीव तांबे, सुरेश कुलकर्णी

चलो मित्रो! अब आज हम आपको पानी से बना माईक्रोस्कोप यंत्र बनाना सिखाते हैं। इसके लिए सामग्री क्या है वह तो देख लीजिए–

काँच की गोलाकार बोतल कम से कम १० इंच लम्बी, पानी, समाचार–पत्र, फूलों की कलियाँ।

चलो, सामग्री तो ले ली हमने। अब करते हैं मशीन बनाने का काम।

सबसे पहले उस काँच की बोतल को पानी से पूरी भर ले। बोतल में हवा न रहे इस बात का ध्यान रखें। फिर उस बोतल को ढक्कन लगाकर बंद कर दें।

और, और क्या? मित्रो! हो गया अपना माईक्रोस्कोप यंत्र तैयार।

अब आप समाचार–पत्र के पृष्ठ पर बोतल को आड़ी रखें। समाचार–पत्र पर छपी छोटी–छोटी लाईनें आपको बड़ी–बड़ी दिखने लगी होंगी। ठीक है। अब आप यही बोतल फूलों के गुलदस्ते पर रखो।

क्या बता रहा है आपको आपका माईक्रोस्कोप?

बोतल में पानी भरने के कारण वह लेन्स में परिवर्तित हो जाती है। जैसे बोतल लम्बी है और उसको आड़ी रखने के कारण वह तीन प्रकार के लेन्स में परिवर्तित हो जाती है। गोलीय, परिवलयाकार और बेलनाकार। अब बोतल के तल के पास गोलीय लेन्स

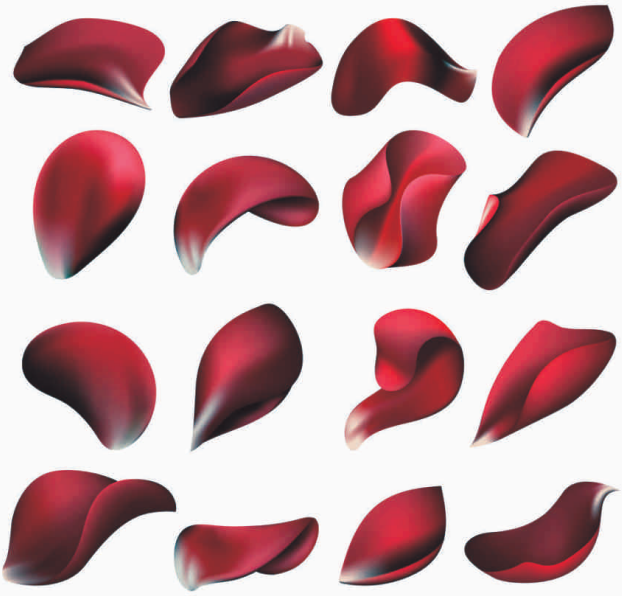

होता है बीच में परिवलयाकार और आड़ी रखने के कारण बेलनाकार लेन्स। अब इसी कारण छोटे अक्षर भी हमें बड़े–बड़े दिखने लगते हैं। पानी का एक बूँद भी परिवलयाकार लेन्स जैसा होता है इसीलिए हमें आँख के सामने पानी से भरी बोतल रखी तो सामने की सभी चीजें बड़ी–बड़ी दिखाई पड़ती हैं।

आपको एक काम दे रहा हूँ।

आप अपने मित्रों के हाथ के तलवों पर यह बोतल मतलब अपना माईक्रोस्कोप मशीन रखकर यह देखें कि हर मित्र के हाथ की रेखाएँ भिन्न–भिन्न है। वह क्यों है? उस पर किस तरह के आकार हैं? किन–किन मित्रों की अँगुलियों पर शंख का आकार है, चलो खोजो।

– इन्दौर (म. प्र.)

संस्कृति प्रश्नोत्तरी के सही हल

१) लक्ष्मण, २) अर्जुन, ३) इंडोनेशिया, ४) कन्याकुमारी, ५) २८ वाँ, ६) आगरा, ७) भारत, ८) मित्र मेला, ९) पांचाल, १०) चार लाख।

नायब सूबेदार बानासिंह

बानासिंह १९४९ की ६ जनवरी को जम्मू कश्मीर में जन्मे। जन्मस्थान रणबीरसिंह पुरा का ग्राम कादयाल और यह रणवीर अपनी बीसवीं वर्ष गाँठ पर ८ जम्मू व कश्मीर लाइट इन्फैंट्री में भर्ती हुए और रणवीरता का विशेष प्रशिक्षण पाया हाईएटीट्यूट वार वेयर स्कूल गुलबर्ग व सोनमर्ग में।

आप जानते हैं सियाचीन के इलाके पर पाकिस्तान की सदैव काकदृष्टि रही है। यहीं २१/५३ फीट ऊँचाई पर बहुत बड़े बर्फीले ढेर पर हैं कायम चौकी जिसे पाकिस्तान ने हथियार था। बानासिंह अपने चार साथियों के साथ इसे भारत के लिए पाने चल पड़े थे।

अन्य साथी गोलीबारी के बीच पाकिस्तान का ध्यान बँटाने का प्रयत्न कर रहे थे। बानासिंह की टोली बर्फ की सीधी दीवार पर तेज हवाओं का सामना करने ३० डिग्री सेन्टीग्रेड के तापमान में बढ़ते जा रहे थे। बहुत कम दूरी तक देखपाना संभव था इसी कठिनाई को लाभ में बदलते हुए वे चौकी के बहुत पास जा पहुँचे। वे टोली को दो भाग में बाँटा और हथगोले फेंकते हुए आगे बढ़ बंकरों पर बम ही नहीं फेंके संगीनों को दुश्मन की छाती मैं भी गाड़ने लगा। सात पाकिस्तानी एस. एस. जी कमाण्डो

मारे गए बाकी भाग खड़े हुए। बानासिंह का साथ देने और जवान भी आ चुके थे और 'कायद चौकी' भारत के अधिकार में आ गई। भारत सरकार ने बानासिंह को परमवीर चक्र तो दिया ही इस चौकी का नामकरण भी **'बाना चौकी'** कर दिया गया।

–

मैं **'देवपुत्र'** पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। यह भारतीय संस्कृति के अनेक प्रसंगों से बाल पीढ़ी को परिचित कराकर उन्हें संस्कारित करने का प्रशंसनीय प्रयास कर रही है। पत्रिका की सामग्री बच्चों की बुद्धि का विकास कर उनके ज्ञान में अभिवृद्धि करती है। देवपुत्र पत्रिका का प्रकाशन निरन्तर चलता रहे, हमारी यही कामना है।

– सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा',
कोटा (राजस्थान)

बाल साहित्य समाचार

डॉ. दिनेश पाठक 'शशि' एवं पद्मश्री डॉ. उषा यादव पुरस्कृत

मथुरा। दिनांक १७.०२.२०२१ नागरी प्रचारणी सभा, आगरा द्वारा अपने स्थापना दिवस समारोह वसंत पंचमी के शुभ अवसर पर भव्य आयोजन में मथुरा के वरिष्ठ बाल साहित्यकार एवं तुलसी साहित्य संस्कृति अकादमी के संरक्षक और पं. हरप्रसाद पाठक स्मृति बाल साहित्य पुरस्कार समिति मथुरा के सचिव, डॉ. दिनेश पाठक 'शशि' एवं आगरा की वरिष्ठ बाल साहित्यकार पद्मश्री डॉ. उषा यादव को अंग वस्त्र, सम्मान पत्र एवं ११–११ हजार रुपये की राशि प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। नागरी प्रचारणी सभा आगरा की सभापति रानी सरोज गौरिहार ने अपने द्वारा संपादित पुस्तक– 'अपना आगरा' के ३० खण्डों का १–१ सेट भी इस अवसर पर दोनों साहित्यकारों को भेंट किया।

बाल साहित्य और रामकथा

भोपाल। दिनांक १८ फरवरी २०२१ को रामायण केन्द्र भोपाल एवं अयोध्या शोध संस्थान उ. प्र. के संयुक्त तत्वावधान में 'बाल साहित्य और राम कथा' विषय पर एक महत्वपूर्ण वेबिनार का आयोजन सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार **डॉ. दिविक रमेश** (दिल्ली) की अध्यक्षता एवं बाल साहित्य शोध केन्द्र भोपाल के निदेशक **श्री महेश सक्सेना** के मुख्य आतिथ्य व देवपुत्र के कार्यकारी संपादक **श्री गोपाल माहेश्वरी** के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

परिचर्चा में प्रसिद्ध बालसाहित्यकार **डॉ. सुरेन्द्र विक्रम** (लखनऊ), **नीलम राकेश** (लखनऊ), **डॉ. प्रभा पंत** (हल्द्वानी) ने बाल साहित्य में रामकथा की स्थिति एवं संभावनाओं पर महत्वपूर्ण प्रकाश डाला। इन्दौर के ही बालकवि एवं कलासाधक **मा. अवि शर्मा** ने भी अपने विचार रखे एवं अपनी कृति बालमुखी रामायण के अंश भी सुनाए। आरंभ में सरस्वती वंदना हेमा जोशी (उत्तराखंड) ने प्रस्तुत की एवं आभार अशोकनगर की डॉ. दीपा रस्तोगी ने माना। संस्था रामायण केन्द्र के महासचिव डॉ. दिनेश श्रीवास्तव ने लेखकों से अपनी आकांक्षाएं प्रकट की। गोष्टी का सफल संचालन अनुभूति शर्मा, भोपाल ने किया।

साहित्यांजलि : तेरा तुझको अर्पण

लखनऊ। सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार **श्रीमती नीलम राकेश** द्वारा प्रत्यक्ष मिलन के अभावों वाले इस कोरोना काल में आभासी तरंग मंच पर 'साहित्यांजलि : तेरा तुझको अर्पण' नामक यशस्वी आयोजन निरंतर है इस आयोजन में देश के प्रख्यात बाल साहित्यकारों से श्रीमती नीलम राकेश का सार्थक संवाद बहुत सराहा जा रहा है।

इसी तारतम्य में दिनांक ६ जनवरी को देवपुत्र के प्रधान संपादक **श्री कृष्ण कुमार अष्ठाना** से चर्चा आयोजित हुई।

कहानी वाचन कार्यशाला

अल्मोड़ा। बाल पत्रिका बाल प्रहरी द्वारा दिनांक १२ फरवरी २०२१ को आयोजित कहानी वाचन कार्यशाला में प्रसिद्ध बाल साहित्यकार **श्रीमती मंजरी शुक्ला** (पानीपत) की अध्यक्षता व **श्री ओम उपाध्याय** (इन्दौर) के मुख्य आतिथ्य में **डॉ. चेतना उपाध्याय** (अजमेर) ने अपनी बाल कहानी का वाचन किया जिस पर सम्मानित अतिथियों सहित बच्चों ने अपनी समीक्षात्मक टिप्पणियाँ की।

कार्यक्रम आभासी माध्यम से तरंग मंच पर (ऑनलाईन) आयोजित था।

चंदा राजा नन्हें बालक

– डॉ. राकेश चक्र

रात हो गई पौधे सोए,
झींगुर जी अब गीत सुनाएँ।
चंदा राजा नन्हें बालक,
जैसे अम्बर में खो जाएँ।।

पता नहीं माँ की गोदी में,
हैं या तारों से बतलाएँ।
समझ परे है कला शशी की,
रूप निराले ही दर्शाएँ।।

गहन रात है बादल छाए,
मुझे नजर वह कहीं न आएँ।
जाने किस की गोदी खेलें,
चुप–छुपकर हँसकर बतलाएँ।।

कभी गोल, चपटे हो जाते,
कभी बाल से बन जाते हैं।
कभी न चमकें बिल्कुल भैया,
कहाँ चोर से छिप जाते हैं।।

चलो आज चंदा को खोजें,
परियों के से पंख लगाएँ।
नहीं छिपें वे इधर–उधर को,
रोज उजाला करके जाएँ।।

– मुरादाबाद (उ. प्र.)

नन्हीं परी और बादल

– संजीव जायसवाल 'संजय'

एक थी नन्हीं परी। प्यारी–प्यारी सी। उसके सोने जैसे सुनहरे बाल और चाँदी जैसे पंख थे। नन्हीं ने थोड़े दिनों पहले ही उड़ना सीखा था। रानी परी के साथ जब वह अपने छोटे–छोटे पंखों को फैला कर उड़ती तो उसे बहुत मजा आता था।

रानी माँ उसे बताती कि दुनिया बहुत सुंदर है। धरती, आसमान, सूरज, चंदा और ढेर सारे दूसरे ग्रह। सबकी अपनी–अपनी सुंदरता और अपनी–अपनी विशेषताएँ हैं। वह नन्हीं को पृथ्वीलोक की कहानियाँ भी सुनातीं। राजा–रानी से लेकर आज–कल के कम्प्यूटरों तक की कहानियाँ।

नन्हीं को यह जानकर बहुत आश्चर्य होता कि पहले मनुष्य हाथी और घोड़ों की सवारी करते थे और आजकल हवाई जहाज पर बैठकर आराम से आसमान में उड़ते हैं। उन्हें परियों की तरह उड़ने के लिए पंखों की आवश्यकता भी नहीं।

यह सब सुनकर नन्हीं का दुनिया देखने का बहुत मन होता। एक दिन वह दुनिया देखने निकल पड़ी। अपने छोटे–छोटे पंखों से उड़ते–उड़ते वह बहुत दूर तक चली आई।

नीला आसमान बहुत बड़ा था। नन्हीं की समझ में ही नहीं आ रहा था कि किधर जाए। तभी उसे आसमान में एक छोटा सा बादल दिखा। बिल्कुल रूई के फाहे जैसा प्यारा–प्यारा सा। नन्हीं अपने पंखों को फैलाकर उसके पास पहुँची और आश्चर्य से बोली– ''अरे वाह! तुम भी उड़ लेते हो?''

''हाँ, हम लोग तो उड़ते–उड़ते पूरी दुनिया घूमते रहते हैं।'' बादल ने बताया।

''क्या तुम मुझे भी दुनिया घुमा सकते हो?'' नन्हीं ने पूछा।

''क्यों नहीं!'' बादल ने कहा और नन्हीं को लेकर चल दिया।

दोनों नीले–नीले आसमान में उड़ते रहे। शहर, गाँव, हरे–भरे जंगल, ऊँचे–ऊँचे पहाड़ और कल–कल बहती नदियाँ। नन्हीं ने यह सब पहली बार देखा था। उसे बहुत अच्छा लग रहा था।

उसने कहा– ''मित्र! दुनिया तो बहुत सुंदर जान पड़ती है।''

''हाँ, बिल्कुल तुम्हारी तरह।'' बादल मुस्कुराया।

नन्हीं हँस दी। उसे बादल बहुत अच्छा लगा। दोनों साथ–साथ उड़ते रहे। तभी नन्हीं ने देखा सामने से एक लम्बा–चौड़ा काला सा बादल तेजी से चला आ रहा है।

''मित्र! शीघ्र हटो वरना लड़ जाओगे।'' वह चिल्लाई।

किन्तु छोटा बादल हट न पाया। दोनों बादल टकराये धड़ाम.... से।

बड़ा बादल जोर से गरजा गड़.... गड़....। इसी के साथ बिजली कड़की कड़.... कड़... कड़..... और छोटे बादल का पानी गिरने लगा झर.... झर.... झर....।

यह देख नन्हीं घबरा उठी और बोली, ''मित्र! तुम्हें क्या हो गया है?''

''कुछ नहीं! तुम्हारे साथ घूमने की मस्ती में मैं अपना काम भूल गया था। उसे अब पूरा कर रहा हूँ।'' बादल हँस पड़ा।

''कैसा काम?'' नन्हीं ने पूछा।

''हम बादलों का काम समुद्र से पानी लाकर दुनिया को देना है। देखना अब किसान अपनी फसल बोयेंगे। बच्चे छपई...छप खेलेंगे। मछलियाँ खूब तैरेंगीं, सभी की प्यास बुझेगी और दुनिया में हरियाली छा जाएगी।'' बादल ने बताया।

''अरे वाह! तुम लोग तो हम परियों की तरह ही सबका भला करते हो। सभी लोग तुमको बहुत प्यार करते होंगे?'' नन्हीं ताली बजाते हुए हँस पड़ी।

''हाँ, प्यार भी करते हैं और हमारी प्रतीक्षा भी करते हैं।'' बादल भी हँस पड़ा।

तभी हवा का एक तेज झोंका आया। पानी उड़ा और उसकी बौछार से नन्हीं के पंख भीग गए।

वह घबरा उठी, ''अरे! मेरे पंख भीग गये। अब मैं घर कैसे जाऊँगी?''

''डरो मत! यह मेरी मित्र है, हवा। थोड़ी सी शरारती है। लोगों को छेड़ने और उनकी चीजें उड़ाने में इसे बहुत मजा आता है। मगर यह दिल की बहुत अच्छी है। अभी तुम्हारे पंख सुखा देगी।'' बादल ने कहा और फिर हवा को संकेत किया।

हवा चलने लगी सर्र....सर्र....सर्र....। नन्हीं के पंख उड़े फर्र... फर्र.... फर्र.... और थोड़ी ही देर में सूख गये। वह बहुत प्रसन्न होते हुए बादल से बोली– ''मित्र! तुम्हारी मित्र भी तुम्हारी तरह बहुत अच्छी है। इसके साथ उड़ने में तो मुझे और अधिक आनन्द आ रहा है।''

तीनों में मित्रता हो गई। वे काफी देर तक बातें करते रहे। धीरे–धीरे शाम होने लगी तब बादल बोला– ''अब मैं चलता हूँ।''

''कहाँ?'' नन्हीं ने पूछा।

''मुझे समुद्र से और पानी लाना है। अब तुम भी घर लौट जाओ। रानी माँ तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही होंगी।'' बादल ने समझाया।

''ओह! मैं तो भूल ही गयी थी। नन्हीं भी वापस लौटने के लिये तैयार हो गयी, फिर बोली, ''किन्तु मित्रो! हम पुन: मिलेंगे।''

''अवश्य!'' बादल ने आश्वासन दिया और हवा के साथ उड़ता हुआ चला गया।

– लखनऊ (उ. प्र.)

कविता

पहली बार

– शादाब आलम

चिड़िया ने जब देखे होंगे, चाँद-सितारे पहली बार।
पंख खोलकर उड़ने को वह, तभी हुई होगी तैयार।।

मछली ने जब देखा होगा, खूब उफनता हुआ समंदर।
कूद पड़ी होगी वह उसमें, लहरों से करने तकरार।।

जुगनू ने जब देखा होगा, आसमान से रात उतरते।
तभी चमककर निकला होगा, वह उसका करने दीदार।।

धीमी चलती हुई हवा ने, सन्नाटा जब देखा होगा।
तभी मचाया होगा उसने, आँधी बनकर हाहाकार।।

– गुडम्बा लखनऊ (उ. प्र.)

छः अंगुल मुस्कान

– विष्णु प्रसाद चौहान

❊ ऑफिस जाते समय बाहर कुत्ता सोते हुए दिखे और शाम को वापस आते समय भी कुत्ता सोता हुए दिखे तो समझ जाना ''जिन्दगी कुत्ते से भी बदतर है।''

❊ **जंवाई–** ससुरजी! आपकी बेटी में दिमाग नाम की कोई चीज ही नहीं है।

ससुर– बेटा! तुमने तो उसका हाथ मांगा था, दिमाग की तो कोई बात ही नहीं हुई थी।

❊ पंडितजी ने कुंडली मिलाई। ३६ के ३६ गुण मिल गए। फिर भी लड़के वालों ने मना कर दिया।

लड़की वाले हैरान होकर पूछने लगे– ''जब सारे गुण मिल रहे हैं, तो आप मना क्यों कर रहे हो?''

लड़के वाले– देखो, हमारा लड़का बिलकुल आवारा है। अब क्या बहू भी उस जैसी ले आयें, क्या?

❊ वेतन कम बताओ तो मित्र इज्जत नहीं करते और पूरी बताओ तो उधार मांगते हैं।

अब समझ नहीं आ रहा है कि इज्जत बचाएँ या पैसा।

– ढाबला हरदू (म. प्र.)

छोटी कहानी

गुण का सम्मान

– सुजीत सिन्हा

टिंकू कौवा इस बात को लेकर उदास रहा करता था कि उसका रंग काला है और उसे सब धूर्त समझते हैं। उसने यह बात अपने मित्र मिनी कोयल को बताई।

''रंग काला होने से क्या हुआ? मैं भी तो काली हूँ।'' मिनी बोली। ''तुम मीठी आवाज में गीत गाती हो, इसलिए सब तुम्हें पसंद करते हैं।'' टिंकू ने उदास होकर कहा।

''जैसे कर्कश बोलने वाले सारे कौवे धूर्त नहीं होते, वैसे ही मीठा गीत गाने वाली सारी कोयलें ईमानदार नहीं होतीं। सबकी पहचान उसके अपने गुण या अवगुण के आधार पर तय होती है।'' मिनी ने समझाया।

मिनी के समझाने के बाद भी टिंकू उदास था। टिंकू को उदास देखकर मिनी कोयल ने कहा– ''चलो, तुम्हारी उदासी को दूर करने का उपाय बुद्धिमान गोलू हाथी मामा से पूछते हैं।'' दोनों गोलू हाथी के पास गए। उन्हें आता देखकर गोलू हाथी प्रसन्न हुआ और बोला– ''आओ, आओ बड़े दिनों के बाद दिखाई पड़े हो?''

''गोलू मामा! हम दोनों आप से सलाह लेने आए हैं।'' टिंकू बोला ''क्या बात है?'' मिनी ने गोलू मामा को टिंकू की उदासी के बारे में बताया। ''हूँ, मामला गंभीर है। जानवरों की बैठक बुलानी होगी। सारे जानवरों के विचार जानने के बाद ही कोई निर्णय लिया जा सकेगा।'' गोलू हाथी ने रविवार को जानवरों की बैठक बुलाई। टिनटिन गिलहरी, मौनी लोमड़ी, जैकी गैण्डा, बॉबी बंदर आदि तय समय पर मैदान में जमा हो गए। ''बैठक क्यों बुलाई गई है? अभी तो कोई त्यौहार भी नहीं है, जिसकी तैयारी के लिए बैठक बुलाई गई हो।'' मौनी लोमड़ी ने बॉबी बंदर से पूछा। ''गोलू ने बैठक बुलाई है तो अवश्य कोई महत्वपूर्ण कार्य होगा।'' बॉबी ने कहा।

''मित्रो! सब शांत हो जाइए।'' गोलू हाथी की चिंघाड़ सुनकर सभी जानवर शांत होकर बैठ गए।

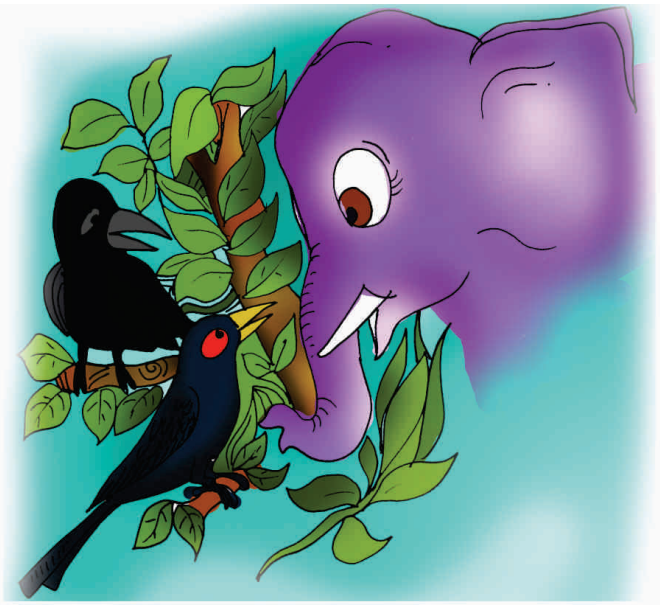

गोलू ने बोलना जारी रखा, ''जैसा कि आप सब जानते हैं कि टिंकू कौवा भारती वन में अपने जन्म से ही रहता आ रहा है। उसके स्वभाव के बारे में सबको पता है। दूसरों की सहायता करने में टिंकू सबसे आगे रहता है। फिर भी टिंकू को इस बात का दु:ख है कि उसके रंग और आवाज के कारण सब उसे धूर्त समझते हैं।'' ''कौवे कोयल के घोंसले में अपना अंडा रख देते हैं, इसलिए उन्हें धूर्त माना जाता है।'' टिनटिन गिलहरी फुदकती हुई बोली।

अब सबकी नजरें टिंकू पर टिक गई। सबकी नजरों को एक साथ अपनी ओर देखकर टिंकू एक पल के लिए सकपका गया। फिर उसने स्वयं को संभाला और बोला– ''मैंने कभी ऐसा नहीं किया। संभवत: और कौवों को लगता है कि कोयल के बच्चों के साथ रहकर उनके बच्चे भी मीठी बोली सीख जाएँगे। फिर उनके बच्चे भी सबको प्रिय लगेंगे।'' टिंकू की भोली बात सुनकर सभी हँस पड़े। गोलू हाथी ने खड़े होकर घोषणा की– ''और कौवे का पता नहीं, किन्तु अपना टिंकू धूर्त नहीं, सच्चा है।''

सबने ताली बजाकर गोलू हाथी के निर्णय का समर्थन किया। टिंकू अब बहुत प्रसन्न था। उसने सबको धन्यवाद दिया। ''सम्मान, रंग–रूप या आवाज पर नहीं, अच्छे गुणों के कारण मिलता है। तुम में सारे अच्छे गुण हैं।'' कहते हुए मिनी ने टिंकू को गले लगा लिया।

– नई दिल्ली

सुनहरे पंख

– डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल

दक्ष हमेशा हवाई किले बनाया करता था। कभी वह सोचता कि पेड़ भी चलने लगते, कभी कल्पना करता कि आकाश के तारे जमीन पर आ जाएँ और कभी उसकी इच्छा होती कि बारिश में बूँदों की बजाय रसगुल्ले गिरने लगें। आज भी उसने ऐसा ही किया।

सांझ का समय था। दक्ष अपने घर के बगीचे में पौधों को पानी दे रहा था। उसने तितलियों और पक्षियों को उड़ते हुए देखा। बस, फिर क्या था! दक्ष के मन में विचार आया, 'काश, उसके भी पंख लग जाते और वह इधर–उधर खूब उड़ता। कभी वह पेड़ों पर जा बैठता तो अगले ही क्षण आसमान की ऊँचाई मापता। सचमुच, बड़े ही मजे होते उसके।' इन्हीं विचारों में खोया–खोया दक्ष घर के भीतर प्रविष्ट हुआ। रात्रि का भोजन करने के उपरांत वह चुपचाप अपने कमरे में जाकर सो गया। थोड़ी देर बाद दक्ष को गहरी नींद आ गयी। सपने में दक्ष ने देखा कि उसे सुनहरे पंख मिल गए हैं। उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। वह झूम उठा। उसने ईश्वर का आभार व्यक्त करते हुए कहा– ''वाह मेरे प्रभु! तूने मेरी मनचाही इच्छा पूरी कर दी है।'' अधरों पर मुस्कान बिखेरता दक्ष उड़ने की तैयारी में था। सर्वप्रथम दक्ष उड़कर पार्क में लगे गुलाब के पौधे पर जा बैठा। गुलाब का पौधा दक्ष का बोझ सहन नहीं कर पाया और झुक गया। गुलाब के फूल घबराकर चिल्लाए, ''बचाओ, बचाओ...।''

गुलाब के फूलों की चीत्कार सुनकर काँटों ने दक्ष को सबक सिखाने की सोची। वे दक्ष के शरीर में चुभ गए। परिणाम यह हुआ कि दक्ष के शरीर से रक्त बहने लगा। वह घबरा गया। उसने झटपट वहाँ से भागने में ही अपनी भलाई समझी। दक्ष उड़ चला वहाँ से। वह निकट के ही बाग में लगे एक आम के पेड़ पर जा बैठा। उसने पके हुए आमों को देखा तो उसके मुँह में पानी भर आया। हाथ बढ़ाकर ज्यों ही उसने कुछ आम तोड़कर चूसने चाहे, पेड़ पर पहले से बैठे हुए बंदरों को बुरा लगा। उन्होंने दक्ष पर हमला बोल दिया। बड़ी कठिनाई से दक्ष ने बंदरों से जान छुड़ाई। वह तेजी से उड़ गया।

दक्ष ने पुन: उड़ान भरी, आखिर उसे पहली बार जो पंख मिले थे। इस बार वह उड़कर एक मकान की छत पर जा पहुँचा। छत पर कुछ बच्चे पतंग उड़ा रहे थे। दक्ष को देखकर वे भयभीत हो गए। आव देखा न ताव, छत पर पड़े ढेले बच्चों ने उठाए और दक्ष पर पथराव करने लगे। दक्ष वहाँ से भी उड़ चला था।

दक्ष थोड़ा चिंतित अवश्य हुआ लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। खुले आकाश की ओर निहारकर उसकी बाँछें खिल गयीं। वह नीले आकाश की ओर उड़ चला। तभी पक्षियों का एक दल भी आकाश में उड़ रहा था। पक्षियों ने दक्ष की ओर गुस्साई आँखों से देखा और उस पर झपट पड़े। वे दक्ष के पीछे–पीछे उड़ने लगे। दक्ष ने पीछे मुड़कर देखा। पक्षियों का इरादा अच्छा नहीं था। दक्ष तेजी से उड़ता रहा। तभी उसने नीचे की ओर झाँका। हरा–भरा एक जंगल मानो उसे निमंत्रण दे रहा था। दक्ष नीचे जंगल की ओर उड़ चला। जंगल की हरियाली उसका मन मोह रही थी। उसने शांति व सुख का अनुभव किया। तभी किसी जानवर के गुर्राने की आवाज उसके कानों में पड़ी। दक्ष ने देखा कि सामने से जंगल का राजा शेरसिंह उसी की ओर बढ़ा आ रहा है। दक्ष के प्राण संकट में थे। उसने वहाँ से तुरन्त उड़ने में ही भलाई समझी।

अब दक्ष उड़ते–उड़ते जंगल से बाहर की दिशा में मुड़ा। उसे एक खेत दिखाई पड़ गया। खेत में पेड़ों की शीतल छाया में किसान और उसके बैल विश्राम कर रहे थे। फसलें लहलहा रही थी। दक्ष चुपचाप जाकर कुएँ के पास बैठ गया। दक्ष के पंखों की आवाज सुनकर किसान ने दक्ष की ओर देखा तो चौंक गया। वह बोल उठा– ''अरे! तुम कौन हो? ऐसा पक्षी तो आज मैंने पहली बार देखा है।''

किसान ने अपने पालतू कुत्ते की ओर संकेत किया। कुत्ता पूरे उत्साह के साथ दक्ष के ऊपर झपटा। देखते ही देखते कुत्ते ने दक्ष को वहाँ से खदेड़ दिया। दक्ष का भूख और प्यास के मारे बुरा हाल हुआ जा रहा था पर मरता क्या न करता। एक बारगी दक्ष ने फिर से उड़ान भर दी। किसान के खेतों से थोड़ी ही दूरी पर एक नदी थी। दक्ष उड़ते हुए नदी के तट पर जा पहुँचा। प्यास बुझाने की गरज से दक्ष ने ज्यों कि नदी के पानी में अपने हाथ डाले, एक घड़ियाल उसकी ओर बढ़ा। दक्ष डर के मारे थर–थर काँपने लगा। बिना पानी पिये ही दक्ष वहाँ से भी नौ–दो ग्यारह हो गया। उड़ते–उड़ते सुबह से शाम हो चली थी।

अंत में दक्ष अपने घर की ओर चल पड़ा। थका–हारा उड़ता–उड़ता वह घर की मुंडेर पर आ बैठा। उसने दोनों आँखें बंद की और प्रार्थना करता हुआ हाथ जोड़कर बोला– ''हे ईश्वर! मुझे आपके दिए हुए सुनहरे पंख नहीं चाहिए। आप इन्हें वापस ले लें। मैं प्रण करता हूँ कि भविष्य में कोई हवाई किले भी नहीं बनाऊँगा।''

तभी दक्ष की आँखें खुल गयी। सामने माँ खड़ी हुई थी। दक्ष से बोली– ''क्या नहीं बनाएगा बेटे?'' ''ओह! यह तो सपना था।'' दक्ष की जान में जान आई। फिर दक्ष ने माँ को सारी बातें बताईं। सुनकर माँ ने कहा– ''ईश्वर ने हर प्राणी को वातावरण के अनुकूल ही बनाया है ताकि उसका अस्तित्व बना रहे। किसी को भी दूसरों जैसा बनने की होड़ नहीं करनी चाहिए।'' ''हाँ माँ, तुम ठीक कहती हो।'' इतना कहकर दक्ष माँ से लिपट गया। **– गुरुग्राम (हरियाणा)**

नरेश का पौधा

– डॉ. प्रभा पंत

नटखट नरेश का मन आज सुबह से ही किसी काम में नहीं लग रहा था। पिताजी के भय से वह किताब खोलकर तो बैठ गया, लेकिन उसका ध्यान कहीं और ही था। उसने पलकें उठाकर दीदी की ओर देखा, लेकिन वह तो अपनी किताब में डूबी हुई थी। उदास नरेश फिर से अपनी किताब के पन्ने उलट–पलट कर देखने लगा, किन्तु प्रयत्न करके भी जब वह स्वयं को नहीं रोक सका तो चुपचाप उठकर दबे पाँव अपने गमले के पास चला गया। उसने पौधे को छूकर देखा और निराश होकर कमरे में लौट आया तथा अपनी कुर्सी पर बैठकर, किताब पढ़ने का प्रयत्न करने लगा।

बाद यह थी कि कुछ दिन पहले ही नरेश के जन्मदिन पर उसकी माँ ने उससे गमले में एक पौधा लगवाया था, जिसकी देखभाल उसे स्वयं करनी थी। उस दिन माँ ने उसे यह समझाया था कि पेड़–पौधे भी हमारी तरह प्राणवान होते हैं तथा जब हम अपने पौधे की प्यार से देखभाल करते हैं तो वह प्रसन्न होकर हमें फूल और फल देते हैं। यदि हम उसका ध्यान नहीं रखते तो वह मुरझा जाता है। माँ की बातें सुनकर नरेश इतना प्रभावित हुआ कि उस दिन से वह प्रतिदिन सुबह उठते ही अपने पौधे के पास जाने लगा। शाला से लौटकर भी वह सबसे पहले अपने पौधे के पास जाकर उसे दुलारता था और उससे बातें किया करता था।

आज सुबह उठकर जब वह पौधे के पास गया तो उसने देखा, वह पौधा कुछ मुरझाया हुआ था; यह देखकर नरेश को बहुत दु:ख हुआ। उसकी बड़ी बहन नेहा बहुत देर से उसकी उलझन को अनुभव कर रही थी, किन्तु पिताजी की डाँट के डर से वह चाहकर भी अपने भाई से कुछ नहीं पूछ पाई, इसलिए नरेश को अपनी उलझन से चुपचाप अकेले ही जूझना पड़ रहा था। तभी अचानक पिताजी की पुकार सुनाई दी– ''नरेश! बेटा यहाँ आओ।''

''आया पिताजी!'' कहता हुआ नरेश क्षणभर में उनके पास जा पहुँचा।

उसकी दीदी का मन यह सोचकर डर से काँपने लगा कि न जाने अब पिताजी निशू को क्या दण्ड देंगे। वैसे तो उनके पिताजी उनसे अत्यंत स्नेह करते थे और उनकी प्रत्येक आवश्यकता को पूरा भी किया करते थे। किन्तु पढ़ते समय यदि उन्हें अपने किसी बच्चे का ध्यान भटकता दिखाई देता या वह कभी उन्हें अभद्र व्यवहार करते देख लेते थे तो दण्डित अवश्य करते थे... इसीलिए नेहा का मन डरा हुआ था।

''जी पिताजी! आपने मुझे बुलाया?'' नरेश की सहमी सी आवाज सुनाई दी।

''जी हाँ! मैं बहुत देर से देख रहा हूँ, तुम्हारा ध्यान किताब में नहीं कहीं और ही है... तुम पढ़ाई छोड़कर बाहर–भीतर आ–जा रहे हो... बताओ क्या बात है...?'' पिताजी ने कठोर स्वर में पूछा।

''जी... .वो... बस यूँ.... ही... पिताजी!'' नरेश घबराहट में हकलाते हुए बोला।

''तुम बार–बार पढ़ाई से उठ–उठकर बाहर जा रहे हो, यूँ ही.. क्या मतलब है इस बात का?'' उसके पिताजी ने सख्ती से कहा।

माँ उस समय रसोईघर में नाश्ते की तैयारी में जुटी हुई थीं। अपने पति की कड़क आवाज सुनकर, वह नाश्ता बनाना छोड़कर तुरन्त कमरे में आ पहुँचीं। माँ को बाहर जाते देखकर नेहा भी अपनी किताब छोड़कर उठ खड़ी हुई और साहस करके, दूसरे कमरे के दरवाजे के पीछे छिपकर उनकी बातें सुनने का प्रयास करने लगी।

''क्या हुआ बेटा! मुझे बताओ?'' उसे माँ की आवाज सुनाई दी। माँ का सहारा मिलते ही नरेश का साहस बढ़ गया और वह बोला– ''माँ मेरी पुस्तक में लिखा है, पौधे को पत्तों से भोजन मिलता है, इसलिए उन्हें रोज सींचना चाहिए।''

''हाँ, ठीक ही तो लिखा है।'' माँ ने कहा।

''किन्तु, माँ... मैं तो प्रतिदिन अपने पौधे को सींचता हूँ फिर वह मुरझा क्यों गया?'' निशू ने उदास स्वर में पूछा।

''चलो देखते हैं, तुम्हारा पौधा क्यों मुरझा रहा है।'' माँ ने कहा और माँ–पिताजी, दोनों नरेश के साथ आँगन में चले गए। गमले के पास जाकर उन्होंने देखा, सचमुच पौधा मुरझाया हुआ था। माँ ने नरेश से कहा– ''जाओ बेटा, अन्दर से थोड़ा पानी लेकर आओ।''

नरेश दौड़ता हुआ पानी लाने जैसे ही अन्दर पहुँचा, उसकी दीदी ने झट से मग में पानी भरकर उसे दे दिया और उसके पीछे–पीछे वह भी बाहर चली आई। माँ ने नरेश से कहा– ''निशू! अब इस पौधे को सींचो।''

नरेश अपने नन्हें–नन्हें हाथों में पानी लेकर, पत्तियों पर पानी लगाने लगा, उसे ऐसा करते देखकर, नेहा को हँसी आ गई। माँ ने पलटकर अपनी बेटी की ओर देखा और उसे समझाते हुए बोलीं,– ''इसमें हँसने की क्या बात है, पेड़ की तन्दुरुस्ती के लिए पत्तों का स्वच्छ रहना भी आवश्यक है। बेटा आपको समझना चाहिए कि आपका भाई अभी छोटा है और आप बड़ी.... है न बिट्टो! इसलिए आपको उसे सिखाना चाहिए... न कि इस प्रकार उसकी हँसी उड़ानी चाहिए।'' नेहा ने लज्जित होकर अपनी पलकें झुका लीं।

पिताजी शांत से खड़े अपने बेटे को देख रहे थे, उन्हें नरेश के भोलेपन पर प्यार आ गया, उन्होंने झट से उसे गोद में उठा लिया और पुचकारते हुए बोले– ''बेटे निशू! सींचने का अर्थ है, पौधे को नहलाना ताकि उसकी जड़ों तक पानी पहुँच जाए। समझे..?''

''नहीं!'' नरेश ने गर्दन हिलाकर कहा।

पिताजी उसे समझाने लगे, ''देखो बेटा! जब पौधे को जड़ों से पानी मिलेगा, सूरज से प्रकाश... और जो साँस हम छोड़ते हैं, उससे कार्बन डाई ऑक्साइड मिलेगी तो इन तीनों के मिलने से पौधे को भरपूर भोजन मिलने लगेगा और वह तेज गति से बढ़ने लगेगा। आया समझ?''

''किन्तु पिताजी! यदि हम प्रतिदिन पौधे को उखाड़कर उसकी जड़ में पानी डालेंगे तो पौधा बड़ा कैसे होगा?'' नरेश ने भोली सूरत बनाकर पूछा।

माँ ने हँसते हुए कहा– ''बेटा! जब आपको भूख लगती है तो क्या आप अपने पेट को खोलकर, उसमें खाना डालते हैं?''

''जी नहीं माँ! हम तो मुँह से खाते हैं।''

''जी हाँ, ऐसे ही जब आप गमले में पानी डालेंगे तो पौधे को भी अपनी जड़ों से पानी मिल जाएगा। अगर पत्तों पर धूल नहीं होगी तो उन्हें भरपूर धूप मिलेगी यादि भोजन और जब पत्ते पौधे के लिए अधिक भोजन बनाएँगे, तब पौधा पेट भरकर भोजन करेगा, भोजन से उसे ताकत आएगी... और वह भी तुम्हारी तरह बड़ा होने लगेगा.. अब आया समझ?''

''जी! अब मैं समझ गया।'' कहता हुआ नरेश झटपट पिताजी की गोद से नीचे उतरा और गमले में पानी डालकर बोला, ''देखिए माँ! पौंधा पानी पी रहा है।''

''अब आप दोनों भी अन्दर चलिये, और शीघ्रता से दूध पी लीजिये।'' माँ ने मंद मंद मुस्कुराते हुए कहा।

''दूध पीकर मैं और दीदी भी जल्दी से बड़े हो जाएँगे।'' कहकर उसने अपनी दीदी का हाथ थामा और उसे खींचता हुआ अन्दर की ओर चल दिया।

– हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)

पुस्तक परिचय

तुम्हें सुनाऊँ एक कहानी

मूल्य २००/-

प्रकाशक- इण्डिया नेट बुक्स

सी-१२२ सेक्टर-१९,नोएडा-२०१३०१

डॉ. प्रभापंत हिन्दी बाल साहित्य की जानी मानी लेखिका है। प्रस्तुत कृति में आपकी दस बाल कहानियाँ हैं जो कहानी होते हुए भी कविता के रूप में हैं। है न मजेदार प्रयोग।

परी हंसावली

मूल्य १४०/-

प्रकाशक- प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, सूचना भवन सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधीरोड, नई दिल्ली

लोककथाएँ सदा से मनुष्यों को रिझाती रहीं है ये हमें क्षेत्र विशेष की बोलचाल एवं संस्कृति से परिचय करवाती हैं। इस कृति में डॉ. प्रभा पंत ने कुमायुंनी लोक कथाएँ प्रस्तुत की हैं।

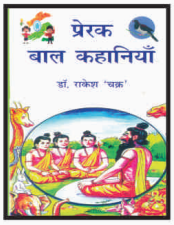

प्रेरक बाल कहानियाँ

मूल्य ५५०/-

प्रकाशक- जन चेतना शिक्षण संस्थान, २/५, द्वितीयतल, गली नं.५, आर. ब्लॉक, राजा गार्डेन, गाजियाबाद (उ. प्र.)

डॉ. राकेश चक्र बाल साहित्य जगत के सुपरिचित व स्थापित रचनाकार हैं। प्रस्तुत पुस्तक में आपकी ३९ रोचक व प्रेरक बाल कहानियाँ संग्रहित हैं।

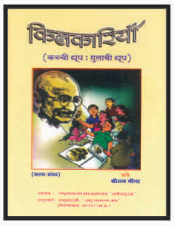

किलकारियाँ

प्रकाशक- राष्ट्रभारती प्रकाशन राष्ट्रजागरण मंच, बाबई रोड, होशंगाबाद (म. प्र.)

प्रसिद्ध रचनाकार श्रीराम मीना द्वारा रचित कच्ची धूप : गुलाबी धूप नामक खंडों में बच्चों व किशोरों के लिए सुरुचिपूर्ण बाल कविताएँ।

युवान

मूल्य १००/-

प्रकाशक- विनायक प्रकाशन, ३१८९/ई, सुदामानगर, गोपुर चौराहा, इन्दौर (म. प्र.)

प्रसिद्ध कलमकार डॉ. लीला (मोटे) धुलधोये की विविध विषयों पर बाल कवितात्मक सरस प्रस्तुति।

आओ सब स्कूल चलें हम

मूल्य ६०/-

प्रकाशक- ईशिका बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स,

वितरक-निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

३७, शिवरामकृपा, विष्णु कॉलोनी, आगरा

प्रस्तुत संग्रह में साहित्यकर्मी टीकम चन्दर ढोडरिया ने आप बच्चों के लिए अपनी रची अनेक बाल कविताएँ संजोई है। जिनसे आप आनंदित हो।

ब्रेक

चित्रकथा-

गांव जाने पर हरीश पहली बार घोड़े पर चढ़ा-

..अपना ध्यान रखना बेटा, कुछ पूछना हो तो पूछ लो..

..घबराओ मत काका. मैंने शहर में कार स्कूटर खूब दौड़ाए हैं..

..घोड़ा दौड़ाना क्या मुश्किल पड़ेगा.. तुम बेफ्रिक रहो..

जरा आगे बढ़ते ही-घोड़ा बिदक गया-

बाप रे..!

.. मर गया..यह तो बेकाबू होकर दौड़ रहा है...

..काश..काका से पूछ लेता..इसके ब्रेक कहां हैं?..

कहानी

चोर के घर में चोर

– पवन कुमार वर्मा

दो चोर थे! चंगू और मंगू! दोनों बहुत अच्छे मित्र थे। दूसरों के घरों में चोरी करके उन दोनों ने खूब धन इकट्ठा किया था। उनके चोरी करने का तरीका बड़ा निराला था। दोनों साथ–साथ चोरी करने कभी नहीं जाते!

जिस घर में चोरी करना होता, वहाँ उन दोनों में से कोई एक काम करने के बहाने से जाता था। चाहे वह काम माली का हो, या फिर एक साधारण नौकर का।

कुछ दिनों तक वहाँ काम करके वह घर की सारी जानकारी इकट्ठा करता। फिर उसे अपने दूसरे साथी को बता देता। उसका साथी सही समय की प्रतीक्षा करता। जैसे ही उस घर के सदस्य इधर–उधर होते, वह उस घर पर धावा बोल देता। फिर वहाँ जमकर चोरी करता।

एक बार चोरी करके दोनों कुछ दिनों तक अपने घर में छुप कर बैठ जाते। मुफ्त की रोटियाँ तोड़ते। फिर कुछ दिनों के बाद अगले शिकार की खोज करते। उनमें चोरी के सामान में कोई बँटवारा नहीं होता था। चोरी का सारा सामान चोरी करने वाले का ही होता था।

फिर अगली बार अपने दूसरे साथी की मदद से पहले वाला चोरी करता था। इस तरह एक–दूसरे की सहायता से दोनों ने बहुत पैसा कमाया था।

कुछ दिनों पहले चंगू ने एक घर में चोरी की थी। घर एक सुनार का था। इस कारण रुपये–पैसों के साथ–साथ उसके हाथ सोना–चाँदी भी खूब लगा। हमेशा की तरह वहाँ की सारी जानकारी उसे मंगू से मिली थी।

मंगू को यह पता था कि इस बार उसके मित्र के हाथ खूब धन–दौलत लगी है। उसके मन में लालच समा गया। उसने सोचा कि अगर किसी तरह उसके मित्र के हाथों आयी धन–दौलत उसे मिल जाए, तो फिर पूछना ही क्या?

इसके लिए वह योजना बनाने लगा। उसके मन में एक विचार आया। उसने सोचा कि क्यों न एक दिन अपने मित्र के घर में ही चोरी की जाए? फिर किसी दिन अवसर पाकर वह यह शहर छोड़कर कहीं और चला जाये। इससे उसका मित्र उस पर संदेह भी नहीं करेगा। फिर तो उसका पूरा जीवन बहुत सुख से कट जायेगा।

उधर चंगू भी ऐसा ही कुछ सोच रहा था। वह जानता था कि उसकी सूचना पर मंगू ने भी खूब धन–सम्पत्ति इकट्ठा कर ली है। क्यों न एक दिन उसी के घर में ही चोरी की जाए। फिर किसी दिन यह शहर छोड़कर वह कहीं और चला जाए। इससे उसका मित्र उस पर संदेह भी नहीं करेगा। फिर तो उसका पूरा जीवन बहुत आनंद से कट जाएगा।

एक दिन! मंगू अपनी योजना के अनुसार चंगू के घर पहुँचा। चंगू उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुआ।

''आओ आओ! मेरे मित्र! इधर कैसे आना

हुआ?'' चंगू उसे देखते ही बोला।

''बस तुमसे ही मिलने आया हूँ।'' मंगू उससे बोला।

''कोई विशेष बात है।'' चंगू उसकी बात सुनकर चौंक गया।

''नहीं नहीं, वास्तव में बात यह है कि मैं कुछ दिनों के लिए अपने गाँव जा रहा हूँ। जल्दी ही लौट आऊँगा। तुम्हें तो पता ही है कि मेरे घर में भी चोरी का बहुत सा सामान है। इसलिए रात के समय में जरा एकाध चक्कर मेरे घर की ओर भी लगा लेना।'' मंगू उससे बोला।

उसने सोचा कि चंगू से अपने गाँव जाने की बात करूँगा, तब तो वह मुझ पर बिल्कुल संदेह नहीं करेगा। इसी बीच अवसर पाकर मैं उसके घर में सुविधा से चोरी कर लूँगा।

''हाँ हाँ! आराम से जाओ! मैं तुम्हारे घर की देख-रेख करूँगा।'' चंगू उससे बोला। उसके मन में तो लड्डू फूट रहे थे। उसने सोचा चलो। मंगू तो अब रहेगा नहीं। उसके घर में खूब आराम से चोरी करूँगा।''

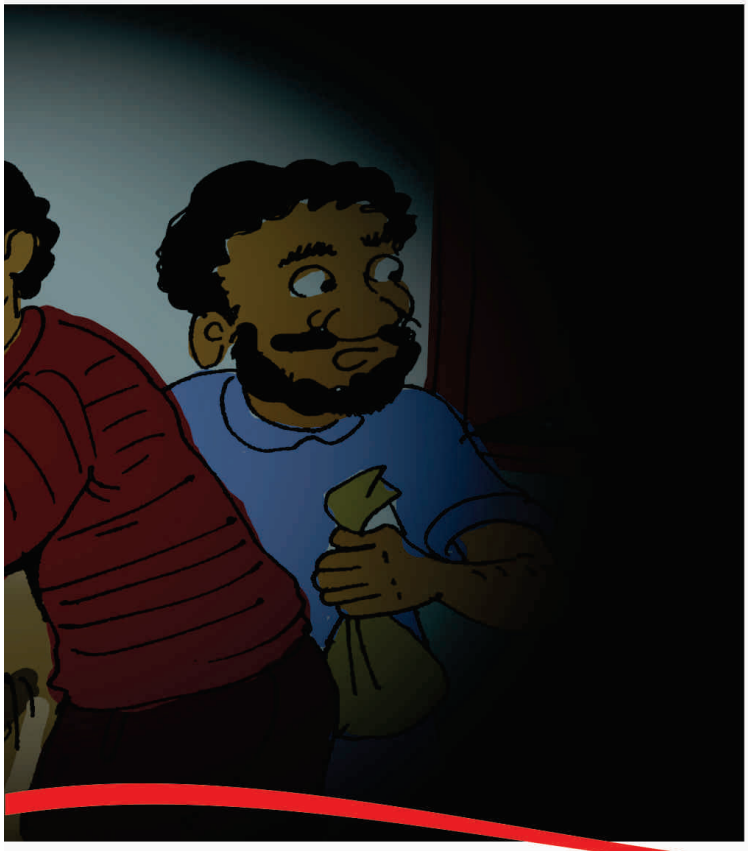

उस दिन शाम होते ही मंगू-चंगू के घर के पास एक स्थान पर छुप गया। फिर रात होने की प्रतीक्षा करने लगा।

जब काफी रात हो गयी तो चंगू ने भी सोचा कि उसे मंगू के घर चलना चाहिए। उसने धीरे से दरवाजा खोला और मंगू के घर की ओर चल पड़ा। उसे घर से निकलता देख मंगू बहुत प्रसन्न हुआ। सोचा! चंगू कहीं जा रहा है। जितनी देर में लौटेगा, उतनी देर में तो मैं सारा घर साफ कर लूँगा।

दोनों ने एक-दूसरे के घर में घुस कर सारा सामान इकट्ठा कर लिया। उसे गठरी में बाँध लिया। फिर बाहर से दरवाजा बंद करके अपने-अपने घर की ओर दौड़ गये।

दुर्भाग्य से एक निर्जन स्थान पर दोनों का आमना-सामना हो गया। दोनों ने अपना चेहरा छुपा रखा था। इसलिए दोनों बिना बात किये अपने-अपने घर की ओर निकल गये। लेकिन दोनों ने एक-दूसरे को पहचान तो लिया ही था। फिर दोनों ने एक-दूसरे के हाथ में गठरी देखकर यह भी समझ लिया था कि आज दोनों ने एक-दूसरे के घर में ही चोरी की है।

जैसे ही दोनों अपने घर पहुँचे। उनका संदेह सही निकला। आज तो दोनों ने एक-दूसरे को ही लूटा था। उनका मन ग्लानि से भर उठा। गलत काम करने का परिणाम गलत ही होता है। यह दोनों अच्छी तरह समझ गये थे।

अगले ही दिन दोनों ने चारी का सारा सामान लोगों को लौटा दिया। साथ में अपने अपराध के लिए लोगों से क्षमा माँगी। उनके इस व्यवहार पर लोगों ने उन पर दया दिखाई और उन्हें क्षमा कर दिया।

कुछ ही दिनों बाद दोनों ने वह शहर भी छोड़ दिया। फिर किसी दूसरे शहर में जाकर परिश्रम करके ईमानदारी का जीवन बिताने लगे।

– वाराणसी (उ. प्र.)

मैं फलों का राजा

– स्वस्ति रावल

मैं तो फलों का राजा हूँ। मेरा रंग पीला है। मैं बहुत प्रकार का होता हूँ। केसर तो बिल्कुल केसरिया, सुगंध से भरपूर और बड़ा ही स्वादिष्ट। क्या रस और क्या फाँक, बस खाते ही रहो। ऊपर से हरा और अंदर केसरिया, मैं लंगड़ा हूँ और रत्नागिरी का हापुस... वाह... क्या कहने... मुँह में पानी आ रहा है ना... मैं हूँ ही ऐसा।

इन सबके अलावा भी मेरी और भी बहुत सी प्रजातियाँ हैं। आप सबकी जानकारी के लिये बता दूँ मैं गर्मी में ही आता हूँ। यही मौसम मेरे अनुकूल होता है। जब मैं कच्चा होता हूँ ना तब भी सबका प्रिय होता हूँ। किसी को मेरी चटनी अच्छी लगती है तो कोई मेरा अचार बड़े चाव से खाता है और जब मेरा खट्टा–मीठा पानी तैयार किया जाता है तब मैं भर गर्मी में लू से बचाने वाली दवा के रूप में भी बहुत उपयोगी होता हूँ।

इतना ही नहीं मेरी सब्जी को लौंजी या अमचूर भी कहते हैं। यह भी बहुत स्वादिष्ट होती है। मैं सबको प्रसन्न रखता हूँ। मैं पकने के बाद बहुत ही मीठा हूँ और मेरा रस भी बहुत स्वादिष्ट होता है। अरे रे मैंने तो मेरा नाम ही नहीं बताया। मैं तो मेरी जानकारी बताने में ही लग गया। हा! हा! हा! क्या तुम्हें मेरा नाम पता है? नहीं हमें तो नहीं पता। क्या तुम बता सकते हो? हाँ हाँ अवश्य.... मेरा नाम आम है। मैं फलों का राजा हूँ और सबके मन को भाता हूँ।

– मुंबई (महाराष्ट्र)

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

महाकवि जयशंकर प्रसाद जब अपने ही नाटक **'चन्द्रगुप्त'** के प्रदर्शन को देखकर लौटे तो उनके एक मित्र ने पूछा– ''नाटक कैसा रहा?''

''नाटक तो बहुत सफल उतरा।'' उन्होंने कहा– ''लेकिन दर्शक फेल हो गए।''

.....

श्री जयशंकर प्रसाद बनारस में जिस रास्ते से अपनी दुकान पर जाया करते थे उस रास्ते के बीच खादी भंडार पड़ता था। प्रसादजी खद्दर पहना करते थे और उस भंडार के मुख्य विक्रेता श्री विश्वेश्वर अय्यर अपनी दुकान पर सबसे अच्छा माल मंगाया करते थे। प्रसादजी जब उधर से निकलते तो कोई न कोई चीज निकालकर उन्हें दिखाते और प्रसादजी उसे लिए बिना नहीं मानते। प्राय: नित्य का यह क्रम हो गया था। एक दिन प्रसादजी बोले, ''अब मैं दूसरी पटरी से जाया करूँगा और इस तरह आपके जाल में पड़ने से बचूँगा।''

जब दूसरे दिन वे सामने वाली पटरी से गुजरे तो भंडार के सामने पहुँचकर आवाज लगाई, ''क्यों अय्यरजी! हम इधर से निकले जा रहे हैं, क्या हमें ऐसे ही जाने दोगे?''

कविता

गिलहरी की जूती

प्यारी अम्मा लेकर आयीं,
जूती नई पुरानी।
घूम रही है जूती पहने,
घर में गिल्लो रानी।

इधर उछलती उधर उछलती,
पेड़ों पर चढ़ जाती।
कौए राजा पीछे दौड़ें,
नहीं पकड़ में आती।
हाँफ गया जब कल्लू कौआ,
पिला दिया है पानी।.....१

टीं-टीं, टीं-टीं करती रहती,
दुम ऊपर उचकाये।
गिल्लू जी की प्यारी बेटी,
सबको पाठ पढ़ाये।
तोता, मैना, बुलबुल बोलें
गिल्लो खूब सयानी।.....२

सबके घर में घुस जाती है,
जो मिल जाये खाती।
चूहा और कबूतर जी का,
माल हजम कर जाती।
भरे जूतियों से फर्राटे,
करती है निगरानी।.....३

– धर्मेन्द्र सिंह 'धरम'
– मैनपुरी (उ. प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०३/२०२१ | प्रेषण तिथि ३०/०३/२०२१ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

आजीवन शुल्क
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना